अजय कुमार उत्तम
मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान
दिस०-
९२

कालरात्रि महाअनुष्ठान

तीव्र तन्त्र का प्रयोग साधक को उस स्थिति में करना चाहिए जब उसके प्राणों पर संकट आ पड़े, जब उसकी इज्जत मान मर्यादा पर चोट पहुंचने की स्थिति आ जाय अथवा उसकी सम्पत्ति का शत्रुओं द्वारा हरण कर लिया गया है, ऐसी तीव्र परिस्थिति में शास्त्र के अनुसार साधकों को तीव्र तन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करना चाहिए।

कालरात्रि तन्त्र अनुष्ठान, शत्रु बाधा पूर्ण निवारण के साथ-साथ स्तम्भन, उच्चाटन, विद्वेषण तथा मारण का भी श्रेष्ठतम प्रयोग है।

यह महाविद्या महाराज्ञी विश्व मोहिनी विद्या कहलाती है, क्योंकि इसकी मूल शक्ति कालिका है और इसके शक्ति चक्र आवरण में सम्मोहिनी और विमोहिनी शक्तियां निवास करती हैं।

यह अनुष्ठान शनिवार को या अमावस्या को ही सम्पन्न किया जाना चाहिए, अन्य सभी दिन पूर्ण रूप से वर्जित है।

कालरात्रि अनुष्ठान में अष्टगन्ध का प्रयोग अनिवार्य है, इसके अतिरिक्त यन्त्र पूजन में सिन्दूर एवं हिंगुल का ही प्रयोग किया जाता है और एक कागज पर अथवा पीपल के पत्ते पर किसी भी वृक्ष की पतली टहनी की कलम बनाकर उससे इसका बीज मन्त्र लिखना चाहिए।

इस साधना में साधक को यह अनुष्ठान मध्यरात्रि में कमरे का द्वार बन्द करके सम्पन्न करना चाहिए और जब तक पूरा अनुष्ठान नहीं हो जाय तब तक द्वार नहीं खोलना चाहिए।

कालरात्रि महायन्त्र का निर्माण भी विशिष्ट समय में ही सम्पन्न किया जाता है, ताम्रपत्र पर अंकित इस यन्त्र को जब शनिवार और अमावस्या का संयोग होता है तब दक्ष ऋषि द्वारा प्रदत्त मन्त्रों से जाग्रत कर प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है, इस प्राणप्रतिष्ठा में प्रथम इच्छाशक्ति, क्रियाशक्ति एवं ज्ञानशक्ति के मन्त्रों से, द्वितीय क्रम में रुद्र, विष्णु एवं ब्रह्मा मन्त्रों से आपूरण और तृतीय क्रम में सत्व, रज एवं तमोगुण मन्त्रों से वामावर्त क्रम में षडंग अनुष्ठान सम्पन्न किया जाता है, इस प्रकार सिद्ध यन्त्र का प्रयोग ही कालरात्रि अनुष्ठान में किया जाना चाहिए, इसके अतिरिक्त इस अनुष्ठान में प्रत्येक दिशा में तीन-तीन देवियों का पूजन कालरात्रि शक्तिबीज से किया जाता है।

विधान

शनिवार अमावस्या की अर्द्धरात्रि के पश्चात् साधक लाल वस्त्र पहन कर अपने पूजा स्थान में जाय, यह आवश्यक है कि वह पूजन की तैयारी पहले से कर ले। पूजा स्थान में सबसे पहले बाजोट (चौकी) पर लाल वस्त्र बिछाकर उसके सामने बाईं ओर एक तांबे के पात्र में भैरव की स्थापना करे, जिससे अनुष्ठान में विघ्न उपस्थित न हो, अब एक दूसरे तांबे के पात्र में एक पुष्प रखे और उस पर **"कालरात्रि महायन्त्र"** स्थापित करे तथा निम्न विनियोग हाथ में जल लेकर करे—

विनियोग

अस्य कालरात्रि मन्त्रस्य, दक्ष ऋषिः, अति जगती छन्दः, अलर्क निवासिनी, कालरात्रिर्देवता क्रीं बीजं, महाराज्ञी शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

वर्ष–१२

अंक–१२

दिसम्बर–१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

॥ ॐ शिवाय कालाय नमो अमृत्युर्वै दिवा वच शंभवाय नमः ॥

भगवान शंकर कल्याणकारी हों, काल को समाप्त कर हमें मृत्यु से अमृत्यु की ओर ले जाएं, हम उनकी शरणागत हों।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर–३४२००१ (राजस्थान)

समाचार एवं सूचनाएं

मारीशस में महायज्ञ

मारीशस में दिनांक १८, १९, २० दिस० ९२ को सम्पन्न होने वाले निखिलेश्वरम्-रुद्र-महाकाली महायज्ञ की तैयारी आयोजकों ने समय पर पूर्ण कर दी है, यज्ञ में मारीशस की अधिसंख्यक जनता के साथ वहां के प्रधानमन्त्री श्री अनिरुद्ध जगन्नाथ अपने मन्त्रिमण्डल के सभी सदस्यों के साथ भाग लेंगे। मारीशस के इतिहास में यह सबसे बड़ा अब तक का धार्मिक आयोजन है। इस सम्बन्ध में अभी वहां के टी०वी० तथा समाचार पत्रों में नित्य मुख्य पृष्ठ पर विशेष खबरें प्रकाशित हो रही हैं, धर्म परायण जनता का उत्साह देखते ही बनता है।

स्वागत गुरुदेव का

पूज्य गुरुदेव केसात दिसम्बर को एयर इण्डिया जहाज द्वारा मारीशस पहुंचने पर उनका भव्यतम स्वागत हुआ, हवाई अड्डे पर स्वागत कर्ताओं में वहां के वाणिज्य मन्त्री **श्री अनिल वाञ्चू** तथा प्रधान मन्त्री की ओर से स्वागत हेतु श्री **सुरेश रम्मन** ने फूलों के हार पहना कर स्वागत किया, **भगवान निखिलेश्वरानन्द सत्संग सोसायटी** के सभी सदस्य **सिद्धाश्रम साधक परिवार** के सभी सदस्यों के अलावा मारीशस के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पोर्ट लुई हवाई अड्डे पर स्वागत किया गया, हवाई अड्डे पर हजारों की संख्या में उपस्थित साधकों ने पूज्य गुरुदेव का जय जयकार कर आकाश गुंजायमान कर दिया। हवाई अड्डे से गाड़ियों में जुलूस पूज्य गुरुदेव के मारीशस निवास स्थान पर पहुंचा, और वहां पूज्य गुरुदेव के चरण स्पर्श एवं आशीर्वाद प्राप्त करने साधकों की संख्या बढ़ती ही चली गई। पूज्य गुरुदेव ने सभी को आशीर्वाद प्रदान करते हुए कहा कि "इस महायज्ञ में जो आयोजन हो रहा है वह हमारी प्राचीन संस्कृति के वास्तविक स्वरूप का परिचायक होगा, मारीशस में धार्मिक चेतना एवं संस्कृति के नये वातावरण के निर्माण में सहायक होगा, जीवन में आज समस्याओं को देखते हुए हम प्राचीन मूल्यों का एवं मन्त्र तन्त्र यन्त्रों का महत्व और भी अधिक बढ़ गया है, यदि विश्व में प्रत्येक स्थान पर ऐसे श्रेष्ठ आयोजन हों, तो निश्चय ही बहुत सारी समस्याएं सरलता से सुलझ सकती हैं और विश्व बन्धुत्व की भावना का विकास हो सकता है।"

आगे होने वाले कार्यक्रमों में आयोजकों ने मारीशस में कई स्थानों पर पूज्य गुरुदेव के प्रवचनों, विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ संगोष्ठी, युनिवर्सिटी में प्रवचन इत्यादि कार्यक्रम निश्चित किये हैं।

उज्जैन में महाशिवरात्रि आयोजन

दिनांक–१७, १८, १९ जनवरी ९३ को उज्जैन में शिवरात्रि के शुभ अवसर पर **"सिद्धेश्वर महाकाल साधना शिविर"** आयोजन करने हेतु "सिद्धाश्रम साधक परिवार" मध्यप्रदेश के ५० वरिष्ठ सदस्यों ने जिनमें

—श्रीमती शकुन्तला श्रीवास्तव (जबलपुर), श्री ओमप्रकाश शर्मा (इन्दौर), श्री एम०पी० शुक्ला (बालको नगर कोरबा), श्री पूर्णेश चौबे (कुक्षी धार), श्री हरीश चन्द्र गौड़ (ग्वालियर), श्री अरुण मेरानिया (सनावद), श्री टी० सुब्बाराव (भोपाल), श्री चन्द्र प्रकाश सोनी (नृसिंहगढ़), श्री आर०पी० त्रिवेदी (बालको नगर), श्री दीनू यादव (सनावद), श्री कैलाश श्रीवास्तव आदि मान्य सदस्यों ने गुरु शक्तिपीठ जोधपुर में पूज्य गुरुदेव के चरणों में बैठ कर इस आयोजन को श्रेष्ठतम रूप से सम्पन्न करने की जिम्मेदारी ली है और संकल्प लिया है कि ३० दिसम्बर तक एक हजार नये सदस्य बनाएंगे। इस शिविर हेतु उपरोक्त सदस्य तो विशेष आर्थिक सहयोग दे ही रहे हैं साथ ही मध्यप्रदेश से अन्य सदस्यों से भी अपेक्षा है कि इस पुनीत कार्य हेतु अपना सहयोग देकर ज्यादा से ज्यादा सदस्यों के साथ इस महापर्व में भाग लेकर आयोजन की शोभा वृद्धि करेंगे।

श्री कैलाश नारायण श्रीवास्तव ने सहकारी बैंक अम्बिकापुर जिले के पद से स्वेच्छिक अवकाश ग्रहण करने का निर्णय किया है जिससे वे "सिद्धाश्रम साधक परिवार" का कार्य पूरी तरह से कर सकें, धन्य हैं ऐसे शिष्य।

जिला सहारनपुर में—

श्री तारा चन्द्र खटाना वरिष्ठ सदस्य हैं और उन्होंने जिले के गंगोह क्षेत्र में ग्राम–डूमर किशनपुर, ग्राम–कुतुब खेडी, ढायकी, ग्राम–मोहढ़ा, बुड्ढा खेडा, जेहरा, पाथूपुरा आदि २१ ग्रामों में **सिद्धाश्रम साधक परिवार** का गठन कर लिया है। प्रत्येक शाखा में उत्साह पूर्ण वातावरण में साप्ताहिक नारायण जप जागरण चल रहा है। डूमर किशनपुर में तो २१ नवम्बर ९२ से ४० दिन तक खण्ड गुरु मन्त्र जप प्रारम्भ किया है, और अखण्ड ज्योति प्रज्वलित किया है। पूज्य गुरुदेव ने मंगल आशीर्वाद दिया है।

अलवर (राजस्थान) में श्री राधेश्याम वशिष्ठ ने सहकारी संस्थाओं के जिला संचालक पद से अवकाश ले लिया है और "सिद्धाश्रम साधक परिवार" के पूर्ण कालीन कार्यकर्ता बनने का संकल्प लिया है। यहां गठित की गई "सिद्धाश्रम साधक परिवार" के वे अध्यक्ष चुने गये हैं, अन्य कार्यकर्त्ताओं में—**श्री लालाराम वर्मा, मुरली बाबू मार्गव, श्री ओम प्रकाश सैनी, श्री जुगल किशोर शर्मा, श्री गणेश चन्द्र शर्मा, श्री यादवेन्द्र शर्मा, आदि उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं।**

कानपुर के निकट बैरी शिवराजपुर में १०, ११, १२ दिसम्बर ९२ को १०८ कुण्डीय बगला महाविद्या यज्ञ वहां के सभी साधक सामूहिक रूप से करने जा रहे हैं। **श्री सुशील गुप्ता, श्री राजेश कटियार, श्री सीताराम मिश्रा** आदि सैकड़ों साधक-साधिकाएं दिन-रात सक्रिय हैं।

"सिद्धाश्रम साधक परिवार" की विशेष सक्रिय शाखाएं

जांजगीर-अकलतरा, कोरबा, रायगढ़, अम्बिकापुर, प्रतापपुर, जमशेदपुर, बोकारो, बैंगलोर, हावड़ा, वड़ौदा, सूरत, अहमदाबाद, नारगोल, विदिशा, आष्टा, इन्दौर, कुक्षी, धार, झाबुआ, शाहबाद-मारकण्डा, यमुना-नगर, लुधियाना, जगदलपुर, रायपुर, अम्बाला, चण्डीगढ़, चाईबासा, रांची, मुजफ्फरपुर, पटना, आदि में भी "सिद्धाश्रम साधक परिवार" के कार्यकर्त्ता उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं, सभी शाखाओं को पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद।

पत्रिका के आजीवन सदस्य

पत्रिका के आजीवन सदस्य सम्मानित सदस्य हैं जिनकी निष्ठा एवं संकल्प शक्ति के कारण आज आपकी इस पत्रिका का विशेष प्रचार प्रसार हो सका है, पत्रिका कार्य में इनकी भागीदारी विशेष रूप से बढ़े, इस हेतु इन्हें पूज्य गुरुदेव की ओर से प्रतिमाह विशेष उपहार एवं विशेष साधनात्मक, क्रियात्मक निर्देश प्रदान किये जाएंगे, इस योजना की विस्तृत जानकारी फरवरी ९३ के अंक में प्रकाशित होगी, सभी आजीवन सदस्यों को अग्रिम बधाई।

वक्त है शपथ लेने का

जैसा कि आपको विदित है कि जनवरी ९३ की पत्रिका सदस्यों को भेजी ही जायेगी, इसके अतिरिक्त जनसाधारण में चेतना हेतु, विभिन्न स्टालों पर भी बिक्री हेतु उपलब्ध कराया जायेगा। पत्रिका के अक्टूबर एवं नवम्बर अंक में प्रकाशित सहयोग अपील के अन्तर्गत अत्याधिक साधकों ने अपना कर्त्तव्य पूरा करते हुए सूचनायें भेजी हैं। विशेष बात तो यह है कि पूज्य गुरुदेव के कई शिष्यों ने लिखा है कि पत्रिका वितरण की जिम्मेदारी हम अपने ऊपर लेते हैं आप सीधे हमें १००, १५०, २००, ५०० पत्रिकाएं रियायत दर पर वी०पी० से भेज दें हम उन्हें अपने क्षेत्र के बुक स्टालों पर वितरित कर देंगे। उनका यह कार्य सेवाभाव से परिपूर्ण एवं सराहनीय है।

यदि प्रत्येक शिष्य इसी अनुसार कार्य करे तो कोई आश्चर्य नहीं कि हम इसी वर्ष पत्रिका एक लाख घरों में उपलब्ध करा सकते हैं जिससे कम से कम बीस लाख प्रबुद्ध पाठक ज्ञान अर्जित कर सकेंगे, इस कार्य हेतु आपको थोड़ा प्रयास तो करना ही पड़ेगा,

यह बात ध्यान रहे कि जो सदस्य सीधे पत्रिका से जुड़े हैं उन्हें पत्रिका के अतिरिक्त महत्वपूर्ण जानकारी प्रपत्र, साधनात्मक निर्देश, गुरुदेव से भेंट इत्यादि में अवश्य ही प्राथमिकता प्रदान की जायेगी।

कुछ विशेष सेवाभावी सदस्य अपने क्षेत्र के सारे सदस्यों की पत्रिकाएं रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा अपने पास मंगाकर सेवा कार्य करते हुए, घर-घर जाकर उन सदस्यों को पत्रिका वितरित कर देते हैं, जिससे एक तो उन सदस्यों को पत्रिकाएं समय पर प्राप्त हो जाती हैं और दूसरे डाक में खोने का कोई डर नहीं रहता, इन सभी सेवाभावी वरिष्ठ सदस्यों से निवेदन है कि वे सन् ९२ में जिन सदस्यों के नाम से पत्रिकाएं अपने पते पर मंगाते थे उन सभी का नवीनीकरण करवा दें, जिससे उन्हें जनवरी का पार्सल समय पर भेजा जा सके।

और अन्त में एक निवेदन

सदस्यता नवीनीकरण के लिए बार-बार पत्र लिखने में कार्यालय का कितना समय जाता है और व्यय भार भी अनावश्यक रूप से बढ़ जाता है, जिन सदस्यों ने अभी तक अपना नवीनीकरण नहीं कराया है, उनसे निवेदन है कि वे लौटती डाक से ही सदस्यता के नवीनीकरण हेतु आवश्यक वार्षिक शुल्क १५०) रुपये भेज दें, जिससे उन्हें जनवरी अंक समय पर भेजा जा सके। ●

जीवन का यही मूल मन्त्र है

तंत्र : साधना और सिद्धि

तंत्र भारतीय जीवन का अभिन्न अंग है, हमारी मूल प्रकृति जीवन के प्रति शिवम् रूप में रही है, हमारा मानस आदिम काल से तन्त्र के प्रति अनुरक्त रहा है, हम दीवार बनाते हैं तो उस पर उंगलियों से चित्र बना कर सुख का अनुभव करते हैं, कुम्हार मिट्टी का घड़ा बनाता है, तो उस पर उंगलियों से टेढ़े मेढ़े चित्र बनाकर सन्तोष का अनुभव करता है, हमारे जीवन के सोलहों संस्कारों में तन्त्र का दखल रहा है. इस प्रकार से यदि देखें, तो हमारा पूरा जीवन तन्त्र से अनुप्राणित रहा है, क्योंकि उसकी जड़ें हमारी सभ्यता और संस्कृति के साथ जुड़ी हुई हैं।

'नारायणीय तन्त्र' में कहा गया है, कि जामल से वेद की उत्पत्ति हुई है, 'जामल' एक प्रकार का तन्त्र ग्रन्थ है, 'नारायणीय तन्त्र' के अनुसार-ब्रह्म जामल ग्रन्थ से सामवेद, रुद्र जामल ग्रन्थ से ऋग्वेद, विष्णु जामल ग्रन्थ यजुर्वेद तथा शक्ति जामल ग्रन्थ से अथर्व वेद का मूल ढांचा बना। इससे ऐसा स्पष्ट होता है, कि तन्त्रों की सृष्टि वैदिक काल से भी पहले हुई थी। मोहन जोदड़ो एवं हड़प्पा की खुदाई में भी तन्त्रोपकरण मिले हैं, उसमें 'शिव' एवं 'शक्ति' के प्रतीक चिह्न भी मिले हैं, अतः तांत्रिक ग्रन्थों में जो शिव एवं शक्ति के प्रतीकों का चित्रण है, वे इसमें प्राप्त हैं, इन सब कारणों से यह तो स्पष्ट हो जाता है कि हमारे देश में तन्त्र की जड़ें सुदूर गहरी हैं।

तांत्रोक्त भाव और आचार

तन्त्र शास्त्र में मानव के दिव्य, वीर और पशु ये तीन भेद कहे गये हैं, जो व्यक्ति जिस प्रकार का होता है, उसको उसी के अनुसार तन्त्र दीक्षा दी जाती है, **'कामाख्या तन्त्र'** में इनका विस्तृत वर्णन है —

दिव्य पुरुष

दिव्यः सर्व मनोहारी मितवादी स्थिरासनः।
गंभीरः शिलष्टवक्ता च शत विपानकः सुखी ।।
सर्व गुणान्वितो दिव्यः सोऽहं कि बहुकाम्यतः।
सर्वदर्शी सर्व वक्ता सर्व दुष्टा निवारकः ।।

वीर पुरुष

निर्भयो भयदो वीरो गुरु भक्ति परायणः।
वाचालो बलवान शुद्धः पंचतत्वे सदारताः ।।

तमोमयः सदावीरो विनयेनः महोत्सुकः ।
एवं बहुगुणैर्युक्तो वीरो रुद्रः स्वयंप्रिये ।।

पशु पुरुष

पशून् शृणु महादेवी सर्वं देव बहिष्कृतान् ।
अद्यमान् पाप चित्ताश्च पंचतत्व विनिन्दकान् ।।

उपरोक्त तीनों भावों को मिला कर तन्त्र मतानुसार सात आचार हैं, 'कुलार्णव तन्त्र' में इनका नामोल्लेख इस प्रकार है—वेद, वैष्णव, शैव, दक्षिण, वाम, सिद्धान्त और कौल ।

साधक एक-एक क्रम को पार करता हुआ कौलाचार की तरफ बढ़ता है, कौलाचार में प्रतिष्ठित होने पर ही उसे ब्रह्म तत्व का साक्षात्कार होता है । वेदाचार में देह और मन की शुचिता का विधान करना ही प्रधान कर्त्तव्य है, वैष्णवाचार में भक्ति का, शैवाचार में ज्ञान का साधन, दक्षिणाचार में भोग का साधन, वामाचार में त्याग का साधन तथा सिद्धान्ताचार में साधक भोग और त्याग क्या श्रेष्ठ है इसका निर्णय करता है तब अन्त में कुलाचार में साधक को ब्राह्मी स्थिति का लाभ होता है ।

कुण्डलिनी शक्ति और षट्चक्र भेद

तन्त्र मत के अनुसार शिव शक्तिमय पर बिन्दु या शब्द ब्रह्म चर और अचर समूची सृष्टि में चैतन्य सत्ता के रूप में परितृप्त है । हर वस्तु के परमाणु में, हर देह कोश में, चित् शक्ति इसी तरह अनुपातिक भाव में गतिशील तथा स्थिर होकर रहा करती है, स्थूल हो या सूक्ष्म, कार्य हो या कारण—सभी जगह चित् शक्ति की गतिशीलता और स्थिरता विद्यमान है, मनुष्य के देह में इसी निश्चल या सुप्त चैतन्य को कुण्डलिनी शक्ति के नाम से अभिहित किया जाता है । कुण्डलिनी शक्ति मूलाधार में सांप जैसी कुण्डलाकृति होकर विराजमान है, यही मनुष्य की शक्ति का भण्डार है, और देह की, प्राण की और मन की सभी प्रकार की प्रेरणा शक्ति का मुख्य स्रोत है। इसी कुण्डलिनी शक्ति को जगाने से मनुष्य उच्चकोटि की सत्ता में पहुंच सकता है, यही निश्चल कुण्डलिनी शक्ति और गतिशील शक्ति अनेक प्रकार के मनुष्यों के भीतर भिन्न भिन्न अनुपात में विद्यमान है, इसी अनुपात के भेद के अनुसार कोई छोटा और कोई महान् बनता है ।
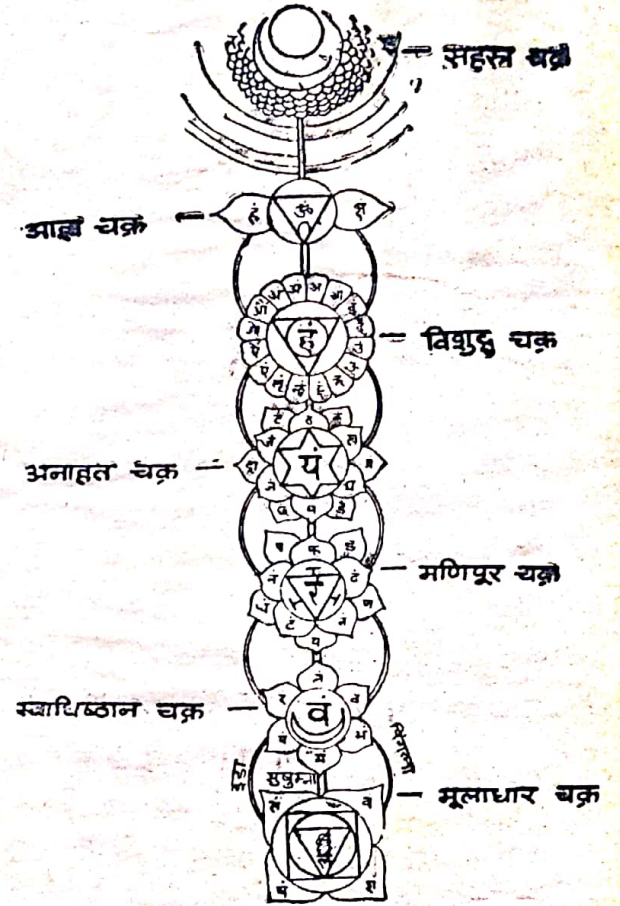
प्रायः सभी प्रकार की भारतीय आध्यात्म साधना में कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत करने का उल्लेख है । कुण्डलिनी शक्ति, जो सर्पाकार होती है, जिसका मुंह नीचे की ओर होता है जब वह ऊर्ध्ववर्ती होकर ऊपर की ओर जाने लगती है, तो उसे कुण्डलिनी योग कहते हैं । कुण्डलिनी शक्ति को आधार शक्ति भी कहा गया है । जड़ रूप में रहने पर भी असल में यह चिद् वस्तु है, यह शक्ति जाग्रत होकर सुषुम्ना की राह होकर सहस्रार की ओर

अग्रसर होती है और षट् चक्र की क्रियाओं का भेदन होता है।

मूलाधार से सहस्रार तक सुषुम्ना के भीतर स्नायु जाल के पांच विशेष केन्द्रों को योगियों ने "पद्म" के रूप में कल्पित किया है, पारिभाषिक रूप में इन्हें ही चक्र कहते हैं, नीचे की ओर से क्रमशः ऊपर की ओर चक्रों के नाम और उनकी स्थिति इस प्रकार से निश्चित की गई है।

१—नाभि के नीचे स्वाधिष्ठान चक्र।

२—नाभि देश में मणिपुर चक्र।

३—सीने में अनाहत चक्र।

४—कंठ में विशुद्ध चक्र।

५—भौंहों के बीच आज्ञा चक्र।

स्नायु तंतु की सहायता से शरीर के सभी प्रकार के संवेदन मस्तिष्क से प्रेरित होते हैं, और फिर मस्तिष्क द्वारा निर्देशित किये जाने पर ही बाहर की क्रिया प्रेरित होती है।

इन्हीं ज्ञानात्मक और क्रियात्मक स्नायु तंतुओं को योगी लोग "ईड़ा" और "पिंगला" के नाम से पुकारते हैं, इन्हीं दो नाड़ियों के द्वारा भीतरी और बाहरी दोनों ओर शक्ति का प्रवाह आया और जाया करता है।

सुषुम्ना का मुंह नीचे की ओर बन्द होता है, साधारण मनुष्य के शरीर में सुषुम्ना रास्ते में कोई स्नायवीय क्रिया ही नहीं होती, अतः साधारण मनुष्य की सुप्त शक्ति को जाग्रत करने के लिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि सुषुम्ना का मुंह खोला जाय और फिर स्नायु प्रवाह चलाने के लिए कुण्डलिनी शक्ति जगाना आवश्यक है, कुण्डलिनी शक्ति को जगा कर अगर सुषुम्ना नाड़ी के भीतर क्रियाशील किया जाय तो वह स्नायु केन्द्र या चक्रों के ऊपर क्रिया करेगी, क्रिया के फलस्वरूप प्रतिक्रिया होगी और फिर उस प्रतिक्रिया से ही अतीन्द्रिय की अनुभूति

का जन्म होगा। कुण्डलिनी शक्ति ज्यों-ज्यों एक-एक केन्द्र को पार करती जायेगी, त्यों त्यों मन का एक-एक स्तर उन्मुक्त होता जायेगा। ऐसा होने से अपने आप साधक को जगत के सूक्ष्म अतीन्द्रिय कारण और कार्य के सम्बन्ध में पूर्ण ज्ञान होता जायेगा, यही शक्ति जब मस्तिष्क में जा पहुंचती है, तब अधिक अनुभूति प्रवण होने से उस केन्द्र की प्रतिक्रिया से ज्ञान का पूर्ण प्रकाश या आत्मानुभूति होती है।

दीक्षा

किसी योग्य गुरु से दीक्षा ग्रहण किये बिना तांत्रिक उपासना में किसी का अधिकार नहीं होता, शारदा तिलक' से दीक्षा के स्वरूप के बारे में कहा गया है—

दिव्य ज्ञानं यतो दधात् कुर्यात् पापस्य संशयः।
तस्मात् दीक्षेति संप्रोक्ता देशिकैस्तंत्र वेदिभिः॥

तन्त्र साधकों के मतानुसार दीक्षा से साधक में दिव्यता आती है, और उसके पापों का नाश होता है। तांत्रिक दीक्षा या अभिषेक आठ भेदों में विभक्त है—

१–शाक्ताभिषेक २–पूर्णाभिषेक

३–क्रमदीक्षाभिषेक ४-साम्राज्याभिषेक

५–महासाम्राज्याभिषेक ६–योगदीक्षाभिषेक

७–पूर्णदीक्षाभिषेक ८–महापूर्णदीक्षाभिषेक

क्रमशः साधक का दीक्षा संस्कार आगे बढ़ता रहता है, अन्तिम अभिषेक से शिष्य का आध्यात्मिक जीवन परिपूर्णता प्राप्त करता है, "सोऽहं" तत्व को प्राप्त करके जीवन मुक्त हो जाते हैं, इसी अवस्था को परमहस पद की प्राप्ति होना कहते हैं, श्री रामकृष्ण परमहंस इसी कोटि के साधक थे।

कुछ तांत्रिक आचार्यों का मत है कि दीक्षा तीन प्रकार की होती है—१-शांभवी, २-शाक्त, ३-मान्त्री। **"वायवीव संहिता"** में कहा है—

शांभवी चैव शाक्ती च मान्त्री चैव शिवागमे।
दीक्षोपदिश्यते त्रेधा शिवेन परमात्मना ॥

सद्गुरु के दर्शन, स्पश व संभाषण से ही जब शिष्य का अन्तःकरण शुद्ध हो जाता है, तो उसे शांभवी दीक्षा कहते हैं—

गुरोरालोक मन्त्रेण-स्पर्शाद् संभाषणादपि।
सद्यः संज्ञा भवेज्जन्तो दीक्षा सा शांभवी मता ॥

—वायवीय संहिता

गुरु जब शिष्य के देह पर अपनी प्राण शक्ति का संचार करते हैं और शिष्य को आध्यातम शक्ति द्वारा प्रेरित करते हैं–उसे शक्ति दीक्षा कहते हैं—

शाक्ती ज्ञानवती दीक्षा शिष्यं देह प्रविश्यतु।
गुरुणा योग मार्गेण क्रियते ज्ञान चक्षुषा ॥

—वायवीय संहिता

मान्त्री दीक्षा से मन्त्र शक्ति की जागृति होती है और शिष्य को अपने इष्ट देवता का साक्षात्कार मिलता है—

मन्त्र मार्गानुसारेण साक्षात्कृत्वेष्ट देवताम्।
गुरुश्चोद्बोधयेच्छिष्यंमंत्र दीक्षोति सोच्चयते ॥

— प्रयोगसार

गुरु का तांत्रिक क्षेत्र में सर्वोपरि महत्व है, उन्हें सामान्य मानव की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता—

अतएव गुरुरेवमनुजः किन्तु कल्पनाः।
दीक्षायै साधकानां च वृक्षादौ पूजनं यथा ॥

और जो शिष्य पूर्ण भक्ति से अपने आपको सद्गुरुदेव के प्रति समर्पित कर देता है तो उसके लिए जीवन के सभी अर्थ पूर्ण हो जाते हैं।

जनवरी विशेषांक तन्त्र विशेषांक है और यदि साधक स्वयं तन्त्र साधनाएं सम्पन्न करना चाहते हैं, अपनी इच्छा शक्ति को तीव्र बनाते हुए गुरु आशीर्वाद से साधना अवश्य सम्पन्न करनी चाहिए तथा यह निश्चित है कि दीक्षा प्राप्त शिष्य तन्त्र साधना में पूर्णता प्राप्त कर सकता है। ●

साधना में सफलता कैसे मिले

जब

सारे दोष-पाप निवारण हो जाएं

साधना में सफलता के नवीन सूत्र

जीवन के सभी कार्य एक निरन्तर चलने वाली साधना के कार्य ही हैं, जिसमें व्यक्ति अपने जीवन का निर्माण करता है, इस निर्माण में कुछ व्यक्तियों का जीवन एक ठोस आधार के साथ आगे बढ़ता हुआ प्रगति की ओर अग्रसर रहता है, और कुछ का जीवन साधारण रूप से ही व्यतीत होता है।

अब प्रश्न उठता है, कि कोई भी व्यक्ति साधना की ओर प्रवृत्त कब होता है ? इसके पीछे उसका मूल चिन्तन यह ही रहता है, कि जीवन में नवीनता हो, और कुछ ऐसा जीवन निर्माण हो कि जीवन दूसरों से अलग बने, जीवन में समस्त सातों सुखों का आनन्द आए, इसके लिए वह अपने भीतर साधनात्मक तत्व का विकास करता है, और उसके लिए उसे अपने गुरु की शरण में जाना ही पड़ता है। साधक के मन में एक भावना उठती है कि मुझे अमुक को अपना गुरु बनाना है, और इस भावना के पीछे बड़ा ही रहस्य छिपा है, यह भावना केवल गुरु साहित्य पढ़ने से अथवा किसी अन्य व्यक्ति के कहने पर नहीं उपजती, इसका तो आधार ही कुछ अलग होता है, और जब वह अपना गुरु चुन लेता है, तो उसके लिए अपने गुरुदेव से दीक्षा प्राप्त करना और दीक्षा के पश्चात् गुरुदेव द्वारा बताये गये मार्ग पर चलना आवश्यक हो जाता है।

आखिर दोष क्या है ?

केवल सोचने मात्र से जीवन का निर्माण नहीं हो सकता, इस जीवन यज्ञ में यन्त्र रूपी वेदी पर तन्त्र द्वारा जब मन्त्र की साधना की जाती है, तो फिर एक शुद्धता की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है, और जब एक बार इस शुद्धीकरण की प्रक्रिया को प्रारम्भ कर देते हैं तो फिर इसे निरन्तर जारी रखना आव-

श्यक है, क्योंकि साधक को यह तो ज्ञान नहीं है, कि उसने अपने पूर्व जन्मो में क्या-क्या दोष किये हैं, किन किन पापों का वह भागी बना है, और उसे परिस्थिति वश जाने-अन्जाने में क्या-क्या कर्म करने पड़े हैं, जिससे उसके जीवन तत्व के चारों ओर ऐसे दोषों की दीवारें खड़ी हो गई हैं कि उसे उसका परिणाम इस जन्म में भोगना पड़ रहा है।

कर्म फल तो जीवन दर जीवन निरन्तर जुड़ा है, और जब तक इसके बन्धन को काटने की प्रक्रिया प्रारम्भ नहीं होती, तब तक यह दोषों की श्रृंखला तो बढ़ती ही जाएगी, कहीं न कहीं इसे तोड़कर काटकर अलग खड़ा होना ही पड़ेगा।

जीवन को चलाना है तो इसमें झूठ, छल, फरेब सब करना ही पड़ेगा, केवल ऐसा सोचकर क्या शुद्ध जीवन का निर्माण किया जा सकता है? कदापि नहीं। इस प्रकार तो हम अपने दोषों को और आगे बढ़ाते जा रहे हैं।

साधना का फल कब मिलता है ?

साधक जब साधना की ओर अग्रसर होता है, और उसके सारे नियमों का पालन भी करता है, और उसके बाद भी जब उसे सफलता नहीं मिलती, तो वह विचलित हो उठता है। धीरे-धीरे धैर्य में कमी आने लगती है, और वह दोष बढ़ता है, साधना में, साधना क्रम में, मन्त्र में, यन्त्र में और यहां तक कि वह यह भी सोचने लग जाता है कि शायद मेरे गुरुदेव ने मुझे सही मार्ग नहीं बताया।

ऐसे कई पत्र कार्यालय को निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं कि हमने बगलामुखी साधना की, यन्त्र की पूजा की, श्रीयन्त्र स्थापित किया, लक्ष्मी मन्त्र जपा, काली की साधना की, नवरात्रि में अनुष्ठान किया, अमुक माला का प्रयोग किया लेकिन सफलता नहीं मिली इसका कारण क्या है?

इसमें दोष आपका नहीं है, तो फिर किसका हो सकता है। इस सम्पूर्ण प्रश्न का विश्लेषण करना आवश्यक है कि क्या एक बार पूजा साधना करने से यदि सफलता नहीं मिले तो कितनी बार पूजा साधना की जाय? और आखिर कब सफलता प्राप्त होगी? इसके लिए मुख्य रूप से दो कार्य आवश्यक हैं। प्रथम तो गुरु भक्ति गुरु साधना, जिसमें दीक्षा, आज्ञा पालन सभी कुछ शामिल है, और दूसरा उनके द्वारा बताये गये मार्ग के अनुसार चलते हुए अपने पिछले जन्मों के और इस जन्म के दोषों का निवारण करना।

जब कोई यन्त्र स्थापित करते हैं उसका पूजन करते हैं और किसी माला से मन्त्र जप सम्पन्न करते हैं तो इतना अवश्य जान लीजिए कि इस क्रिया का प्रभाव अवश्य ही पड़ रहा है, और धीरे-धीरे इस क्रिया के विकास द्वारा ही शुद्धीकरण सम्भव हो पाता है। अब आपने एक साधना को पांच बार किया, मन्त्रों के प्रभाव से उसका फल यह हुआ कि दोष के बन्धन कटने लगे, लेकिन इसकी भी एक सीमा है। जिस यन्त्र के प्रभाव से शुद्धीकरण प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है, उसी यन्त्र का बार-बार प्रयोग करने से फल प्राप्ति पूर्ण रूप से सम्भव नहीं हो पाती। जब कोई वस्त्र मैल से आवश्यकता से अधिक भर जाता है तो उसके दो ही उपाय हैं या तो उसे पूर्ण रूप से साफ किया जाय, इस साफ करने की प्रक्रिया में इसे कूटना पीटना भी पड़ेगा, इसको गर्म पानी में उबालना भी पड़ेगा तब कहीं जाकर वह वस्त्र शुद्ध हो पायेगा, लेकिन क्या ऐसे वस्त्र में नवीनता रह पायेगी, और दूसरे उपाय के रूप में जब वस्त्र मैल चीकट अथवा कीटाणुओं से भर जाता है तो उसे फेंक देते हैं, क्योंकि उसको पहिनना उचित नहीं रहता।

ठीक इसी प्रकार अपने जिन यन्त्रों पर अनुष्ठान सम्पन्न किये हैं, जिन मालाओं से मन्त्र जपे हैं वे आपके सामने अपने पूजा स्थान में रखे हुए हैं, नित्य आप उनकी पूजा अवश्य करते हैं, एक-एक साधना पांच-पांच बार कर आपने अपने इस जन्म और पूर्व जन्म के दोषों को इकट्ठा कर उन पर भार डाल दिया है और उन्हीं यन्त्रों से अब शुद्ध पूजा सम्भव नहीं है। आखिर कब तक ये यन्त्र आपके दोषों का भार वहन करते रहेंगे। इसके लिए आवश्यक है

कि शमन प्रयोग द्वारा इन यन्त्रों के साथ ही अपने पाप दोष का नाश कर दिया जाय, और जीवन की शुद्धता के लिए, पूर्ण सफलता के लिए नवीन यन्त्र स्थापित किया जाय।

शमन प्रयोग

शमन प्रयोग केवल गुरु तत्व का चिन्तन कर गुरु को साक्षी रखते हुए ही सम्पन्न किया जा सकता है, इसके लिए किसी भी रविवार को प्रातः उठ कर स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर साधक अपने पूजा स्थान में बैठे और एक लाल कपड़ा बिछाकर उसमें सारे यन्त्र, माला, तावीज इत्यादि रख दे, इस प्रकार एक पोटली अर्थात् गठरी के रूप में बांध कर गांठ लगा दें, फिर अपने हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु देशकालौ संकीर्त्य अमुक शर्माहं ममोपरि इह जन्म गत जन्म स्वकृत परकृत कारित क्रियमाण कारयिष्यमाण भूत-प्रेत पिशाचादि मन्त्र तन्त्र यन्त्र ओटादिजन्यसकलदोष बाधा निवृत्ति पूर्वक पूर्ण सिद्धि दीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादि-प्राप्त्यर्थ शमन साधना प्रयोग करिष्ये ।

ऐसा कह कर हाथ में लिया हुआ जल सामने छोड़ दें, तत्पश्चात् अंगुलियों से मन्त्र सख्या गिनते हुए एक सौ आठ बार गुरु मन्त्र का जप करें—

गुरु मन्त्र

।। ॐ परमतत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ।।

अब साधक आठ दिशाओं के आठ गुरु मन्त्र का जप करे, इसके लिए निम्न क्रम से मन्त्र आह्वान करना है, और यह प्रार्थना करें कि हर दिशा में स्थित देवी-देवता साक्षी हैं कि मैं अपने समस्त दोषों के निवारण हेतु निम्न प्रयोग कर रहा हूं—

पूर्व दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ श्रीं निखिलेश्वरानन्दाय श्रीं ॐ ।

अग्नि दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ ऐं ऐं निखिलेश्वरानन्दाय ऐं ऐं नमः ।

दक्षिण दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ ह्रीं परमतत्वाय निखिलेश्वराय ह्रीं नमः ।

नैर्ऋत्य दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ क्लीं क्लीं निखिलेश्वरानन्दाय क्लीं क्लीं नमः ।

उत्तर दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ श्रीं श्रीं श्रीं निखिलेश्वर्यै श्रीं श्रीं श्रीं नमः ।

वायव्य दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं निखिलेश्वर्याय श्रीं ह्रीं ऐं ॐ ।

पश्चिम दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ क्रीं निखिलेश्वरानन्दाय क्रीं ॐ ।

ईशान दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ ह्रीं निखिलेश्वर्यै ह्रीं नमः ।

अनन्त (आकाश) दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ 'नि' निखिलेश्वर्यै 'नि' नमः ।

अधः (भूमि) दिशा कृत गुरुमन्त्र

ॐ निखिलं निखिलेश्वर्यै निखिलं नमः ।

अब सभी यन्त्रों की इस पोटली में दस लोहे की कीलें डाल दें और बिना किसी से बोले इसे किसी जलाशय में जाकर प्रवाहित कर दें अथवा घर से दूर कहीं भूमि में गाड़ कर उस पर पत्थर रख दें।

इस प्रकार एक महत्वपूर्ण अध्याय पूर्ण होता है और साधना का नया विशेष अध्याय प्रारम्भ होता है जिससे कि जो भी साधनाएं सम्पन्न करें उसमें इच्छित फल प्राप्ति अवश्य ही प्राप्त हो।

मनन **चिन्तन**

ज्ञानामृत

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।
अपार संवित्सुखसागरेस्मिल्लीन परे ब्रह्मणियस्यचेतः ॥

जिसका चित्त गुरु चरणों में लीन हो गया, उसका कुल पवित्र हो गया, माता कृतार्थ हो गयी और पृथ्वी उससे पुण्यवती हो गयी, वह पूर्ण शान्त, सुखद परमानन्द में लीन होने के साथ-साथ अपने परिचितों स्वजनों को भी इस सुख में भागीदार बनाने के लिए संकल्पित समर्थ हो गया।

सप्त सागर पर्यन्तं तीर्थ स्नानफलं सदा। गुरोरंघ्रिपयो बिन्दु सहस्त्रांशं न पूरयेन् ॥

सप्त समुद्र तीर्थ स्नान भी गुरु पादोदक के एक बिन्दु के समान भी नहीं है।

धिक्कुलं धिक्कुटुम्बं च धिग्गृहं धिक् सुतं च धिक्। आत्मानं धिक् शरीर च गुरु चरणे पराङ्मुखम् ॥

जो गुरु से विमुख है, उसके कुल को, कुटुम्ब को, घर को, पुत्र को, आत्मा को और शरीर को धिक्कार है, धिक्कार है।

गुरो दाता गुरो भोक्ता गुरुः सर्वमिदं जगत्। गुरो यजति यज्ञश्च य गुरुः सोहमेवहि ॥

गुरु ही देने वाला है, गुरु ही भोगने वाला है, इस जगत् में मेरे लिए गुरु ही सब कुछ है, गुरु ही यज्ञ स्वरूप ईश्वर है, अतः सर्वत्र जो कुछ दृष्ट है, वह सब गुरुमय ही है।

क्षौणी पतित्वमथवैकम किंचनत्वं, नित्यं ददासि बहुमानमथापमानम्।
वैकुण्ठवासमथवा नरके निवासं, गुरुदेव देव ! मम नास्ति गतिस्त्वदन्या ॥

गुरुदेव ! आप मुझे पृथ्वीपति बना दीजिये चाहे परम दरिद्र, नित्य सम्मान प्रदान कीजिये अथवा अपमान, वैकुण्ठ में वास दीजिये चाहे नरक में पहुंचाइये, परन्तु हे गुरुदेव ! आप से भिन्न मेरी तो और कोई गति नहीं है।

सम्पूर्ण दीक्षा रहस्य

- **शिष्य को दीक्षा क्यों आवश्यक ?**
- **दीक्षा का मूलभूत तत्व–भेद ?**
- **दीक्षा से जीवन मार्ग में गति**
- **बार-बार दीक्षा आवश्यक क्यों ?**

चाहे साधक कितना ही महान् हो, पर उसे तब तक पूर्ण सिद्धि एवं सफलता प्राप्त हो ही नहीं सकती, जब तक कि वह गुरु से दीक्षा प्राप्त न कर ले। मात्र मुंह से गुरु···· गुरु या शिष्य ··· शिष्य···· का उच्चारण करने से कुछ नहीं हो पाता, जब कि पूर्ण विधि-विधान के साथ शास्त्रोक्त पद्धति से दीक्षा प्राप्त कर लेता।

दीक्षा ही तो शिष्य की निधि है, जीवन का संबल है, मन की पूर्णता, शिव सायुज्य होने का विधान है लक्ष्य तक पहुंचने का मार्ग है ··· ···· ।

दीक्षा वास्तव में ही आत्म संस्कार का ही दूसरा नाम है, व्यक्ति, साधक या शिष्य मानवी व्यवहार दोष एवं पाश से आबद्ध रहता है, इन दोषों और पापों की वजह से उसका पूर्णत्व प्रस्फुटित नहीं हो पाता, वास्तव में ही शिष्य पूर्ण शिव स्वरूप होते हुए भी जब उसकी आत्मा पर झूठ, छल, पाप और असत्य का आवरण होता है, तो उस वजह से वह अपने आप को अपूर्ण समझता है, तथा वह अपने हृदय में पूर्णता अनुभव नहीं कर पाता, यह कमी उसमें कई अशुभ भावनाओं का संचार करती है, इन कारणों से देह में विविध रोग होते हैं, आयु क्षीणता का अनुभव करता है और सुख-दुःख का अनुभव करता रहता है, एक प्रकार से देखा जाय तो साधक या शिष्य इन बाहरी छल प्रपंचों से घिरा रहता है, और साधना में सिद्धि या सफलता नहीं मिल पाती, ऐसी स्थिति में साधक

निराश हो जाता है ।

इस प्रकार की बद्ध आत्मा में ये तीन प्रकार के आवरण-देह, आयु और भोग सदा रहते हैं, दीक्षा के द्वारा इन आवरणों को पूरी तरह से हटाया जाता है, मलिन आत्मा का संस्कार किया जाता है, और उस साधक को या शिष्य को पूर्ण चैतन्य बना दिया जाता है, जिससे कि वह तेजस्विता प्राप्त कर सके और सांसारिक सभी पापों को दूर कर साधना में सफलता प्राप्त करता हुआ, इष्ट के पूर्ण दर्शन कर सके ।

दीयते ज्ञान सद्भावः क्षीयते पशु भावना ।
दानक्षपण संयुक्त दीक्षा तेनेह कीर्तिता ।।

अर्थात् जिसके द्वारा ज्ञान दिया जाता है, और पशु भावना को क्षय किया जाता है, ऐसे गुरु प्रदत्त दान को "दीक्षा" कहा जाता है ।

दीक्षा ही महत्वपूर्ण

दीक्षा मूलो जपः सर्वे दीक्षा मूलं परं तपः ।
दीक्षा माश्रित्य निवसेत् यत्र कुत्राश्रमे वसन् ।।

— कुलार्णव तन्त्र

संसार में समस्त प्रकार के जप का तथा तप का मूल दीक्षा ही है, इसलिए विविध जजालों के पथ को छोड़कर सीधे सरल-मार्ग दीक्षा का ही आश्रय लेना चाहिए । जो गुरु दीक्षा न दे सके, वह गुरु नहीं अपितु पातकी है, जिस आश्रम या गुरु गृह में दीक्षा विधान नहीं है वह हरा-भरा होते हुए भी मरूस्थल के समान है । जहां पर शक्तिपात करने की व्यवस्था न हो, वहां त्याग तपस्या और परमार्थ का भले ही कितना ही ढोल पीटा जाता हो, वह व्यर्थ है । सच्चा गुरु वही कहला सकता है, जो दीक्षा देने का विधान जानता हो, क्योंकि दीक्षा से ही तो शिष्य का ज्ञान उद्दिप्त होता है, वह चाण्डाल होते हुए भी सर्व बन्धनों से मुक्त हो जाता है ।

दीक्षया मोक्ष दीपेन चाण्डालोऽपि विमुच्यते ।

—कुलार्णव तन्त्र

वास्तव में ही दीक्षा जीवन की सर्वोच्च निधि है, जीवन का वरदान है, शिव सायुज्य होने की क्रिया है, मानव को महेश्वर बनाने की प्रक्रिया है । दीक्षा के द्वारा शिष्य केवल मात्र देवत्व नहीं ब्रह्म भाव ही नहीं, अपितु गुरुत्व की प्राप्ति कर लेता है ।

दीक्षा जीवन का गति तत्व

गुरु का क्या कार्य है ? गुरु का कार्य है, शिष्य की आत्मा के साथ अपने आपको अभिन्न कर देना और शिष्य के आन्तरिक सभी पापों का शीघ्रातिशीघ्र नाश करके उसे पूर्ण चैतन्य शुद्ध एवं शिवमय बना देने की प्रक्रिया. यह कार्य गुरु ज्ञान द्वारा, दीक्षा द्वारा और शक्तिपात द्वारा सपन्न करता है ।

सबसे पहले गुरु साधक को ज्ञान द्वारा उसके वास्तविक स्वरूप को समझाता है, हकीकत में देखा जाय तो साधक का जीवन या यों कहा जाय कि व्यक्ति का जीवन अशुद्ध दूषित और विषय वासनाओं से युक्त होता है, उसकी आत्मा पर विभिन्न पापों और दोषों के आवरण पड़े रहते हैं, फलस्वरूप शिष्य की या साधक की आत्मा इन दोषों की वजह से माया में आविष्ट रहती है, और प्रयत्न करने पर भी न तो पूर्ण चैतन्य हो पाती है, और न इष्ट से एकाकार होकर उसके दर्शन कर पाती है ऐसी स्थिति में गुरु, ज्ञान के द्वारा उसे समझाता है कि यह पशु जीवन एक मामूली और सामान्य जीवन है, प्रभु ने हमें मानव जीवन दिया है, तो हममें ज्ञान चेतना का भी प्रस्फुटन किया है, और हम ज्ञान के द्वारा ही समझ सकते हैं कि किन तरीकों से इस पापमय दोषयुक्त जीवन को शुद्ध चैतन्य बना सकते हैं इसी को दीक्षा या ज्ञान क्रिया कहा जाता है ।

दीक्षा-जीवन को शुद्ध बनाने की क्रिया

अब प्रश्न उठता है कि शिष्य को दीक्षा लेने के लिए क्या करना चाहिए, और उसे किस क्रम में दीक्षा प्राप्त

करनी चाहिए, क्या एक बार दीक्षा लेना ही आवश्यक है, अथवा बार-बार दीक्षा क्रम किया जाय ?

जो साधक भोगार्थी हैं क्या वे अपने जीवन को क्षण प्रति क्षण शुद्ध रखकर कार्य कर सकते हैं ?

क्या सांसारिक जीवन में रहने वाल व्यक्ति झूठ, छल, लोभ, इत्यादि से मुक्त रह सकता है ?

क्या सांसारिक व्यक्ति अपने जीवन यापन के लिए उल्टे सीधे सभी कार्यों को करने से बच सकता है ?

ऐसा कदापि संभव नही हो पाता है, उसे तो अपने जीवन में जीवन यापन के लिए और सांसारिक सुखों की प्राप्ति के लिए तरह-तरह के विचित्र क्रिया कलाप करने पड़ते हैं, केवल कंद मूल खाकर वह न तो जंगल में रह सकता है, और फिर इसी जीवन में रहते हुए शुद्ध साधनाएं संपन्न कर उनमें पूर्णता प्राप्त करना चाहता है उन साधनाओं के सहारे अपने जीवन लक्ष्य में और अधिक गति पाना चाहता है यह सब संभव इसी जीवन में करना चाहता है और वह कर सकता है क्योंकि जब भी साधक के मन में गृहस्थ के मन में साधना का एक बीज फूटता है तो यह निश्चित है कि उसके भीतर सद्गुरु देव के प्रति आस्था है, विश्वास है, मन्त्रों की शक्ति की स्वीकार करता है, तन्त्र की क्रिया संपन्न करना चाहता है और इन तन्त्र और मन्त्रों से युक्त यन्त्र को अपने घर में स्थापित करना चाहता है. अपने कार्य स्थल पर स्थापित करना चाहता है. जिससे घर में सुख सपत्ति में वृद्धि हो, और कार्य में प्रगति हो।

जैसा कि मैंने पहले दीक्षा के संबन्ध में स्पष्ट किया कि दीक्षा जीवन का सबसे बड़ा वरदान है, गुरु द्वारा शिष्य को दिया हुआ उपहार है, उसके जीवन को आगे बढ़ाने के लिए एक ठोस नींव का निर्माण है।

जहां तक दीक्षा भेद का प्रश्न है तन्त्र शास्त्रों में तीन प्रकार की दीक्षाओं का विशेष वर्णन आया है—१-शांमवी दीक्षा, २-शाक्त दीक्षा, ३-मान्त्री दीक्षा। इस प्रकार की दीक्षाएं केवल उन्हीं व्यक्तियों के लिए संभव है जो कि केवल तन्त्र को ही अपना जीवन बनाना चाहते हैं और निरन्तर तांत्रिक क्रिया संपन्न करना चाहते हैं ऐसा व्यक्ति सुखी गृहस्थ जीवन व्यतीत नहीं कर सकता।

भोगार्थी (सांसारिक व्यक्ति) क्या करे ?

साधना में सिद्धि और भोग का शुद्ध समन्वय गुरुदेव द्वारा बताये गये मार्ग से ही संभव हो सकका है, क्योंकि जीवन में निरन्तर जाने-अनजाने में सांसारिक व्यक्तियों द्वारा ऐसे कार्य होते रहते हैं, जिसके कारण साधना का बल क्षीण होता है और साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती।

इसलिए शास्त्रों में जो दीक्षा क्रम बताया गया है उस क्रम की अनुपालना के साथ-साथ शिष्य को और भी दीक्षाएं ग्रहण करते रहना चाहिए। क्योंकि जब भी शिष्य एक दीक्षा लेता है तो उसकी आत्मा पर पड़े हुए आवरण का एक हिस्सा शुद्ध होता है, और यह क्रम बार-बार दोहराया जाना चाहिए, और जब तक साधक कुछ विशिष्ट साधनाएं सम्पन्न करें जैसे—दस महाविद्या साधना, जिसमें कमल, (लक्ष्मी), काली, मातंगी, तारा साधना सम्मिलित है तो साधक को उस समय विशेष दीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिए, जिससे उसे निरन्तर गुरुदेव की शक्ति की ऊष्णता तीव्रता प्राप्त हो सके, और उसके भीतर सुप्त शक्ति का जागरण हो सके।

इसलिए जो साधक कहते हैं कि हमने अमुक गुरु से दीक्षा ले ली है, और अब बाकी सब काम तो गुरुदेव का है, हम तो अपने जीवन में उल्टे-सीधे सभी कार्य करते रहेंगे, क्या ऐसा सम्भव हो सकता है ? कदापि नहीं, जिस प्रकार शरीर की शुद्धता के लिए नित्य स्नान आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन को पूर्ण शुद्ध एवं सोने के समान चमकदार बनाने के लिए जीवन रूपी कोयले में से कोयला हटा

कर हीरा तरासने के लिए बार-बार दीक्षा आवश्यक है।

शास्त्रों के अनुसार दीक्षा के निम्न आठ भेद कहे गये हैं, उनकी पालना तो आवश्यक है—

१-समय दीक्षा (प्रारम्भिक दीक्षा)

किसी भी प्रकार के साधक को दीक्षा देकर शिष्य बनाना, जिसमें उसके हृदय में चिन्तन और मन्थन शुद्ध विचारों का प्रारम्भ हो सके। आगे जीवन किस पथ पर बढ़ना है, इसका बीजारोपण ही समय दीक्षा है।

२-ज्ञान दीक्षा

देह दोष शुद्धि, आयु दोष शुद्धि और भोग दोष शुद्धि का बीजारोपण इसी दीक्षा के अन्तर्गत आता है, और इन दोषों को दूर करने की क्रिया कर्म कहलाती है, इसका विकास इस दीक्षा के बाद ही प्रारम्भ होता है।

३-जीवन मार्ग दीक्षा

इस दीक्षा में गुरुदेव विशेष बीज मन्त्र प्रदान करते हैं, और उसे जपने की क्रिया तथा आत्म शक्ति के निर्माण की उसे चैतन्य करने की क्रिया शक्ति—इसी दीक्षा में प्रदान करते हैं, जिससे साधक अपनी शक्ति को पहिचान कर जीवन पथ पर तीव्र गति से आगे बढ़ सके।

४-शांभवी दीक्षा

जब शिष्य गुरुमय हो जाता है तो उसे इस दीक्षा के द्वारा उस शक्ति से संचालित करते हैं जिसके द्वारा वह विशेष तांत्रिक साधनाओं को अपने आप सम्पन्न कर सफल हो सके और इसी दीक्षा में शिष्य को रक्षा कवच प्रदान करते हैं, उसकी रक्षा का भार अपने ऊपर लेते हैं।

५-चक्र जागरण दीक्षा

देह शुद्धि और ध्यान शक्ति का विकास एवं शक्ति संचालन जिसके द्वारा शरीर स्थित शक्ति चक्र एक के बाद

एक जाग्रत हो उठते हैं, ऐसा विशेष उपहार इस दीक्षा के अन्तर्गत ही प्रदान किया जाता है।

६-विद्या दीक्षा

मन्त्र के मर्म और उसके बीज रूप को समझने का अधिकार और विशेष सिद्धियां—अणिमा, महिमा, गरिमा आदि इसी दीक्षा के बाद शिष्य को प्राप्त हो सकती हैं।

७-शिष्याभिषेक

इस दीक्षा के अन्तर्गत शिष्य का विशेष अभिषेक किया जाता है जिससे वह तत्व, तत्वेश्वर, निवृत्त, भोग और शान्ति, इन पांचों की पूर्णता प्राप्त कर विशेष सिद्धि प्राप्त कर सके।

८-आचार्याभिषेक

इस अतिमहत्वपूर्ण दीक्षा में सकलीकरण संस्कार कर अन्तर का पूर्ण अभिषेक किया जाता है और शिष्य को गुरु ब्रह्म शक्तिपात से आचार्य अभिषेक दीक्षा दी जाती है, यह दीक्षा प्राप्त शिष्य ही सिद्धाश्रम में प्रवेश पाने का अधिकारी होता है।

वास्तव में जब जीवन के सौभाग्य का उदय होता है तो जीवन में दीक्षा का चिन्तन पैदा होता है और इसके द्वारा हम सद्गुरुदेव को पहिचान कर सेवा करते हुए, उनकी आज्ञाओं का पालन करते हुए, उनके चरणों में लीन होते हैं। ऐसे सद्गुरु से एक बार शिष्य बनकर निरन्तर दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए, जिससे जीवन की सभी सिद्धियां प्राप्त हो, सकें, वास्तव में जीवन में पूर्णता प्राप्त करने के निरन्तर प्रयास करते रहने की क्रिया को ही दीक्षा कहा जाता है। ●

गुरुधाम में साधना सम्पन्न कीजिये

हर गुरुवार : विशेष साधना शिविर

प्रत्येक शिष्य की यह इच्छा रहती है कि वह जो भी साधना करे उसमें उसे गुरु का मार्ग दर्शन तथा आशीर्वाद प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त हो। साधक जब अपने घर में होता है और साधना सम्पन्न करता है तो उसे विरोधी शक्तियां चारों ओर से खींचती हैं, इस कारण उसका चित्त एकाग्र नहीं हो पाता। इसके अतिरिक्त शुद्धता, अशुद्धता का जो वातावरण रहना चाहिए वह भी कई बार सम्भव नहीं हो पाता, इस कारण साधना में सफलता का प्रतिशत कम रहता है।

जब साधक गुरुधाम में अथवा गुरु शक्तिपीठ में साधना करता है तो उसे दो लाभ प्रत्यक्षतः अनुभव होते हैं प्रथम तो साधना के प्रत्येक स्तर पर सही मार्गदर्शन मिलता है, दूसरे जहां सद्गुरुदेव विराजमान होते हैं, वहां एक शक्ति चक्र निरन्तर गतिमान रहता है, इस कारण उस स्थान में भी एक शक्ति तत्व व्याप्त रहता है, वहां न तो साधना में व्यवधान उपस्थित हो सकता है और न ही कोई विघ्न। इसीलिए प्राचीनकाल से ही भारतवर्ष में अपने गुरु के आश्रम में रहने का एक विशेष महत्व चला आ रहा है।

जब मुहूर्त की बात आती है तो इतना अवश्य है कि गुरु पूजन के लिए और गुरु आशीर्वाद प्राप्त कर साधना के लिए गुरुवार से श्रेष्ठ कोई दिवस नहीं है। गुरुवार को गुरुधाम में गुरु के समक्ष साधना करना जीवन का सौभाग्य ही कहा जा सकता है। गुरुधाम में गुरु उपस्थित न भी हों तो भी उस स्थान में वह शक्ति प्रवाह होता है कि जैसे ही शिष्य ऐसे स्थान में प्रवेश करता है तो उसे अपने भीतर एक रक्त प्रवाह तीव्र होता अनुभव होता है, एक साधनात्मक, संरचनात्मक वातावरण आन्दोलित हो उठता है।

अब हर गुरुवार को—

इस उद्देश्य को और शिष्यों की भावना को देखते हुए यह निश्चित किया गया है कि हर गुरुवार को गुरुधाम दिल्ली में एक लघु साधना शिविर अवश्य ही आयोजित किया जायेगा, जिससे साधक एक दिन के साधना-त्मक प्रयोग द्वारा सिद्धि के मार्ग में आगे बढ़ सकें, गुरुवार को जिस धूम-धाम से मनोयोग पूर्वक शिष्य सर्वप्रथम गुरु पूजन एवं गुरु आरती सम्पन्न करते हैं, उस दृश्य को देख कर उसे अनुभव कर रोम-रोम में एक आनन्द की लहर समा जाती है। आप किसी भी गुरुवार को स्वयं वहां आकर साधना का प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर सकते हैं, ये सारी बातें कहने से नहीं अपितु स्वयं अपने अनुभव से जानी जा सकती हैं। आने वाले चार गुरुवार में सर्वप्रथम १० दिसम्बर गुरुवार को वसुधा लक्ष्मी प्रयोग शिविर, १७ दिसम्बर गुरुवार को धनेश्वरी बुद्धिदा यक्षिणी साधना शिविर, २४ दिसम्बर गुरुवार को शत्रुहन्ता हनुमन्त प्रयोग साधना शिविर, ३१ दिसम्बर गुरुवार को त्रैलोक्य मोहन गौरी प्रयोग साधना शिविर सम्पन्न होंगे।

गुरुधाम—३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा नई दिल्ली-११००३४

टेलीफोन—७१८२२४८

गुरुधाम दिल्ली में

वसुधा लक्ष्मी प्रयोग

दिनांक–१० दिसम्बर १९९२ (गुरुवार)

यह साधना मूल रूप से आकस्मिक धन प्राप्ति तथा रुके हुए धन को पुनः प्राप्त करने की विशेष साधना है, अथवा लॉटरी, जुए इत्यादि द्वारा भी अनायास धन की प्राप्ति हो सकती है। इस साधना में दो-तीन बातें मुख्य रूप से आवश्यक हैं। इसमें वसुधा लक्ष्मी के तीन स्वरूपों का विशेष ध्यान किया जाता है। ये हैं–आद्या लक्ष्मी, पुष्टि लक्ष्मी एवं विश्वमोहिनी लक्ष्मी।

इस साधना की सामग्री से पहले इन तीनों स्वरूपों का पूजन कर तत्पश्चात् उसी सामग्री मे वसुधा लक्ष्मी का विशेष पूजन किया जाता है।

वसुधा लक्ष्मी मन्त्र—

॥ ऐं ह्रीं श्रीं आद्यलक्ष्मि स्वयंभुवै ह्रीं वसुधालक्ष्म्यै नमः ॥

जो साधक इस साधना को पूर्ण भक्ति पूर्वक सम्पन्न करता है तो उसे लक्ष्मी अपने भूमि स्वरूप में वरदान देती है और वह जिस भूमि पर भी कार्य करता है उस स्थान पर सफल होकर विशेष लक्ष्मी प्राप्त करता है। ●

गुरुधाम दिल्ली में

धनेश्वरी बुद्धिदा यक्षिणी प्रयोग

दिनांक १७ दिसम्बर १९९२ (गुरुवार)

यक्षिणी साधना को कभी भी सरल साधना नहीं समझना चाहिए, यद्यपि जो साधक अपनी भक्ति में जिस रूप में इसे सिद्ध करता है उसी रूप में यक्षिणी उस पर प्रसन्न होकर उसे वरदान अवश्य प्रदान करती है। धनेश्वरी बुद्धिदा यक्षिणी की दो स्वरूपों की साधना है जिसमें साधक की बुद्धि तथा ज्ञान का वर प्राप्त होता ही है साथ ही इस विशेष यक्षिणी के लक्ष्मी स्वरूप के कारण साधक लक्ष्मी प्राप्ति का जो भी वर मांगता है वह प्राप्त होता है।

यह पूरी रात्रि की साधना है और इस साधना में जब रात्रि में यक्षिणी उपस्थित होकर प्रश्न पूछे— **"दत्यार्थ प्रणयं मन्त्रो कृतो सा त्वं किमिच्छसि"** (हे प्रिय साधक! तू क्या चाहता है)। तब साधक को उत्तर देना चाहिए—**"देवि! दारिद्रयदग्धोस्मि तन्मे नाशय नाशय"** (हे देवि! मैं दरिद्रता की अग्नि में जल रहा हूं उसे नष्ट करो नष्ट करो)।

यक्षिणी साधना को माता रूप में, बहिन रूप में तथा प्रिया रूप में किसी भी एक रूप में सिद्ध किया जा सकता है। अतः इस साधना में जब संकल्प लें तो सर्वप्रथम उस रूप का ही ध्यान करें। ●

गुरुधाम दिल्ली में

शत्रुहन्ता हनुमन्त प्रयोग

दिनांक—२४-१२-६२ (गुरुवार)

श्री हनुमान प्रतीक हैं—ब्रह्मचर्य शक्ति, पराक्रम, बल, वीरता, निडरता, भक्ति, विश्वास और सरलता के। पवन पुत्र रुद्रावतार हनुमत् साधना साधक के लिए एक अजय शक्ति की साधना है और जब हनुमान जाग्रत होते हैं तो फिर अन्य सारे भूत-प्रेत बाधाएं, शत्रु सब कुछ शान्त हो जाते हैं। श्री हनुमान को रुद्र का अवतार माना जाता है और इन्हें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यम, कुबेर, अग्नि, वायु, इन्द्र आदि द्वारा वर एवं शक्तियां प्राप्त है। श्री हनुमान के दो स्वरूप हैं—वीर स्वरूप और दास स्वरूप। जब इस गुरुवार को शत्रुहन्ता साधना की जा रही है, तो श्री हनुमान के वीर रूप की साधना करनी आवश्यक है। श्री हनुमान भक्त साधक को उनकी आठ सिद्धियां—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व प्राप्त होती ही है। श्री हनुमान का रुद्र रूप तो मानों शत्रुओं का संहार करने के लिए ही तत्पर रहता है, इसीलिए इन्हें महावीर कहा गया है।

इस रात्रि को हनुमान साधना में सबसे पहले २१ पाठ हनुमान चालीसा से सम्पन्न करने हैं, फिर गुरुदेव द्वारा प्रदत्त हनुमन्त साधना सामग्री में से **'हनुमान यन्त्र'** को स्थापित कर उसकी पूजा करती है, इस पूजा में सिन्दूर का प्रयोग किया जाना है, और पांच बत्तियों का दीपक जलाएं प्रसाद में रोटी का चूरमा अथवा केले इत्यादि का प्रसाद रखें। इस दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें और केवल हनुमान जी को चढ़ाया हुआ प्रसाद ही ग्रहण करें।

वीर मुद्रा में बैठकर साधना सामग्री को प्रयोग में लेते हुए मन्त्र जप करें—

बीज मन्त्र

।। ॐ हुं हुं हसौं ह्स्फ्रौं हुं हुं हनुमते नमः ।।

शत्रुहन्ता हनुमान मन्त्र

।। ॐ पूर्व मुखाय पंचमुखहनुमते टं टं टं टं टं सकलशत्रुसंहारणाय स्वाहा ।।

सम्पूर्ण विधि-विधान सहित शत्रुहन्ता प्रयोग सम्पन्न करने से साधक को सफलता सात दिन से सात सप्ताह के भीतर अवश्य ही प्राप्त हो जाती है।

शत्रु कितना ही बलवान हो, उसे झुकना ही पड़ता है, और कई बार तो ऐसा भी देखा गया है कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से शत्रु साधक के अधीन हो जाता है।

भूत-प्रेत पिशाच इत्यादि का कोई भी डर नहीं रहता और जहां यह प्रयोग निरन्तर किया जाय उस घर पर तांत्रिक प्रयोग भी सफल नहीं हो सकते।

गुरु धाम में गुरु चित्र के समक्ष बैठ कर साधना करने से जो प्रभाव प्राप्त होता है, वह अन्यत्र कहीं भी नहीं मिल सकता। ●

गुरुधाम दिल्ली में

त्रैलोक्य मोहन : गौरी वशीकरण साधना

दिनांक–३१-१२-९२ (गुरुवार)

वशीकरण सिद्धि के दो स्वरूप हैं—प्रथम तो आप अपने जीवन को सही दिशा में चलाने के लिए जो आपका विरोधी है उसे इस प्रकार बदलना चाहते हैं कि वह आपकी इच्छानुसार कार्य करे, दूसरे प्रकार के वशीकरण में आप जिस स्त्री अथवा पुरुष को चाहते हैं वह आपके बिल्कुल अनुकूल हो जाय, पति चाहता है कि पत्नी उसके मन के अनुकूल हो, युवक चाहता है कि उसे अपनी इच्छानुसार कन्या मिले अथवा प्रेमिका के साथ उसका विवाह हो अथवा प्रेम में सफलता मिले, इसके अतिरिक्त मां-बाप चाहते हैं कि उनकी कन्या का विवाह उचित समय पर श्रेष्ठ युवक के साथ हो, जिससे चिन्ता भार हलका हो सके।

इन सभी वशीकरण सम्बन्धी कार्यों हेतु त्रैलोक्य मोहन गौरी वशीकरण प्रयोग अवश्य सम्पन्न किया जाना चाहिए। इस अनुष्ठान में जहां साधक एक विशेष संकल्प लेकर कार्य करता है उसी भाव में उसके मन में इच्छा शक्ति भी होनी चाहिए और गुरु भक्ति गुरु आशीर्वाद तो आवश्यक ही है, इस प्रकार आज के दिन इस अनुष्ठान में प्रत्येक व्यक्ति अपनी-अपनी इच्छानुसार अपने-अपने कार्य के अनुसार विशेष संकल्प लेंगे— दाहिने हाथ में जल लेकर गुरु को साक्षी रखते हुए यह संकल्प लेना है।

इस प्रयोग में दो प्रकार के विशेष मन्त्रों का प्रयोग होता है साधना सामग्री का उपयोग किस प्रकार करना है, और विशेष पूजा विधि का ज्ञान प्रयोग के दौरान ही साधकों को बताया जायेगा।

गौरी आकर्षण मन्त्र

॥ ॐ नमः कालिकायै सर्वाकर्षिण्यै अमुकमाकर्षय शीघ्रमानयानय श्रां ह्लीं क्रों भद्रकाल्यै नमः ॥

त्रैलोक्य मोहन वशीकरण मन्त्र

॥ ॐ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं ग्लौं ब्लूं हसौ नमः कामेश्वरि सर्व सम्मोहय कृष्णे कृष्णवर्णे कृष्णाम्बरसमन्विते सर्वानाकर्षयाकर्षय शीघ्रं वशं कुरु कुरु हुं ऐं क्लीं श्रीं ॥

साधकों को अपने-अपने कार्य व संकल्प के अनुसार इन दोनों मन्त्रों की पांच-पांच माला का जप करना है।

गुरु धाम में, गुरु शक्ति पीठ में गुरु के समक्ष गुरु को साक्षीभूत रखते हुए जब वशीकरण जैसी साधनाएं सम्पन्न की जाती हैं तो किसी प्रकार की हानि होने की सम्भावना रहती ही नहीं, अपितु कार्य शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न होता है।

वशीकरण साधनाओं में साधक को तत्काल सफलता मिल सकती है, उसके लिए आवश्यक है कि वह अपना भाव शुद्ध बनाये रखें और ऐसी कोई गलत वशीकरण साधना न करें, जो कि लौकिक दृष्टि से, सामाजिक दृष्टि से अनुचित हो। ●

रोग चिकित्सा

सरल साधनाओं से

मानव का पहला कर्त्तव्य होता है कि वह अपने शरीर को स्वस्थ एवं तन्दुरुस्त रखे, उसका सारा प्रयत्न यही होता है। यदि तबियत ठीक है, तो उसे खान पान, रहन-सहन, मौज-शौक सब अच्छे लगते हैं, परन्तु बीमारी होने पर चाहे उसके पास करोड़ों रुपये हों तब भी बेकार हो जाते हैं, और उसका आनन्द नहीं उठा सकता।

आयुर्वेद के माध्यम से तो असाध्य बीमारियों की चिकित्सा होती ही है, परन्तु इस क्षेत्र में साबर साधनाओं के माध्यम से भी बीमारियां दूर हो जाती हैं, और व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है।

१-उदर रोग

कई कारणों से उदर रोग हो जाते हैं, थोड़े बहुत रूप में बराबर दर्द बना ही रहता है, पेट में जलन, भोजन न पचना, रह-रह कर दर्द उठना, पेट में शूल होना, किसी विशेष भाग पर पेट में दर्द बने रहना, आंखों में तकलीफ होना, आंतों में घाव हो जाना, अतिसार आदि रोगों के लिए यह प्रयोग श्रेष्ठतम है, और इस प्रयोग से निश्चय ही रोगी को लाभ होता है।

किसी रविवार के दिन रोगी स्वयं या कोई व्यक्ति स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जांय और सामने तेल का दीपक लगावें, फिर तांबे के पात्र में **"रोग मुक्ति यन्त्र"** रख दें, जो कि मन्त्रसिद्ध हो, अब उस पर केसर का तिलक करें तथा हाथ में जल लेकर कहें कि मैं अमुक व्यक्ति के अमुक रोग को दूर करने के लिए यह साबर प्रयोग कर रहा हूं।

फिर **हकीक माला** से निम्न मन्त्र का जप तीन माला करें—

मन्त्र

ॐ मुं मुकुंदेश्वरी देवी आवे उदर रोग मिटावे अमुक को ठीक करे जो न करे तो महावीर की दुहाई शब्द साचा पिण्ड काचा फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

उस यन्त्र पर जो जल चढ़ाया जाय उसमें से तीन चम्मच रोगी को पिला दें और बाकी जल में कपड़ा भिगो कर रोगी के पेट पर फेर दें, इस प्रकार ग्यारह दिन तक करें।

ग्यारह दिन के बाद वह यन्त्र धागे में पिरो कर रोगी के कमर में बांध दें तो निश्चय ही रोगी किसी भी प्रकार के उदर रोग से मुक्त हो जाता है, और पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करता है।

२-चर्म रोग और रक्त रोग

यदि किसी भी प्रकार का चर्म रोग हो, त्वचा पर सफेद या लाल दाग बनने लग गये हों, चमड़ी पर चकत्ती होने लग गई हो या त्वचा बदरंग होने लग गई हो अथवा शरीर पर दाद, खाज, खुजली आदि हो या शरीर में रक्त की न्यूनता हो यह प्रयोग तुरन्त सिद्धि दायक है, और इससे निश्चित रूप से पूर्ण चर्म रोग मिट जाता है।

शुक्रवार के दिन नौ पीपल के पत्ते ला कर एक थाली में सजा दें और प्रत्येक पीपल के पत्ते पर **"नर्मदेश्वर शिवलिंग"** रख दें, जो मन्त्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो पात्र के बाहर नौ दिये लगा लें और फिर **"रुद्राक्ष माला"** से निम्न मन्त्र की तीन माला मन्त्र जप रोगी या कोई व्यक्ति करे।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु को त्रिलोचन देवी को अंजनी को महासाबरी को अमुक रोगी को ठीक करे चर्म रोग मिटावे रक्त शुद्ध करे जो न करे तो भगवती चिन्तामणि को त्रिशूल खावे।

प्रत्येक माला की मन्त्र जप समाप्ति पर नर्मदेश्वर पर जल चढ़ावें, जब तीन माला मन्त्र जप हो जाय तो पीपल के पत्ते तथा नर्मदेश्वर पात्र से अलग रख दें, तथा उस जल में से कुछ तो रोगी को पिला दें, और कुछ उसके सारे शरीर पर लगा दें, ऐसा नौ दिन करे, पीपल के पत्ते रोज बदलने आवश्यक है।

प्रयोग समाप्ति के बाद नर्मदेश्वर घर के किसी शुद्ध स्थान पर स्थापित कर दें तो नौ दिन के भीतर-भीतर रोगी को स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, और वह अनुकूलता अनुभव करता है।

यह प्रयोग परीक्षित है और इससे रोगी को विशेष आराम प्राप्त होता है, मन्त्र जप समाप्ति के बाद वह रोगी रुद्राक्ष माला गले में धारण किये रहें।

३-बाल रोग

बालकों को बचपन में कई प्रकार के रोग हो जाते हैं, जिनमें सूखा रोग अर्थात् शरीर सूखता जाना, बालक के पेट में कीड़े पड़ जाना, शरीर में कमजोरी होना दुबलापन, पेट फूल जाना, हाथ-पैर कमजोर होना और अन्य बालरोग से सम्बन्धित बीमारियों को दूर करने के लिए यह प्रयोग विशेष महत्वपूर्ण है और इसका प्रयोग अवश्य ही करना चाहिए।

सोमवार के दिन बच्चे की मां या बच्चे का पिता पात्र में **'शिशु रोग निवारण यन्त्र'** रख दे और उस पर एक गुलाब का पुष्प रख कर जल चढ़ाएं, फिर **"मूंगा माला'** से तीन माला निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

ॐ नमो भगवती वज्र शृंखले रोग भक्षतु स्वादतु सर्व उपद्रव रक्षतु नमः।

इस प्रकार नित्य तीन माला जप करे, मन्त्र जप के बाद गुलाब का पुष्प बच्चे को खिला दे या पानी में घोल कर पिला दे, इस प्रकार तीन दिन करे, तीन दिन के बाद वह शिशु रोग निवारण यन्त्र काले धागे में पिरोकर बालक के गले में बांध दे तो निश्चय ही उस बालक के समस्त रोग दूर हो जाते हैं और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करने लग जाता है।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है और प्रत्येक मां को चाहिए कि ऐसा प्रयोग अपने बालक की शुभता के लिए सम्पन्न करे।

४-खांसी और दमा

चाहे कितना ही पुराना दमा या खांसी हो, और ठीक नहीं हो रही हो तो यह प्रयोग उनके लिए संजीवनी की तरह है।

रविवार के दिन से यह प्रयोग प्रारम्भ करें, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर सफेद आसन पर बैठ कर सामने

किसी पात्र में नागरबेल का एक खाली पत्ता रख दें और उस पर फिटकिरी का चुटकी भर पाउडर रख दें, फिर उस पर 'दक्षिणावर्ती शंख' रख दें, जो मात्र अंगूठे के आकार का हो और उसके सामने किसी भी माला से तीन माला निम्न मन्त्र का का जप करें—

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं जं जं कामेश्वर बाण देवतै नमः ॥

तीन माला मन्त्र जप के बाद वह शंख अलग रख दें और वह पान तथा उस पर जो फिटकिरी का पाउडर रखा हुआ है वह रोगी मुंह में रख ले तथा उसका लार निकलता रहे, बाहर नहीं थूके।

यह नौ दिन का प्रयोग है, दसवें दिन वह दक्षिणावर्ती शंख लोहे के पात्र पर रखकर नीचे से आंच देकर जला दें और उसकी राख को शीशी में भरकर रख दें, फिर नित्य नागरबेल के पान पर दो चुटकी फिटकिरी का पाउडर तथा एक चुटकी वह राख लेकर मुंह में रखें और उसकी लार निगलें, तो कुछ ही दिनों में दमा रोग हमेशा के लिए मिट जाता है, खांसी भी समाप्त हो जाती है। ●

पूज्य गुरुदेव के कार्यक्रम

गुरु दर्शन एवं गुरु भेंट हेतु प्रत्येक शिष्य का हृदय व्याकुल रहता है और उसके मन को तभी शान्ति मिलती है, जब वह स्वयं गुरु के समक्ष उपस्थित होकर अपनी बात कहता है, दीक्षा प्राप्त कर शिष्य बनने हेतु और अपनी समस्याओं के उचित समाधान, मार्ग दर्शन एवं साधनात्मक ज्ञान प्राप्त करने हेतु पूरे भारतवर्ष से नित्य प्रति शिष्य, साधक गुरु शक्तिपीठ जोधपुर आते हैं और जब गुरुदेव यहां जोधपुर में नहीं होते तो उनकी निराशा बढ़ जाती है।

इसी प्रकार गुरुधाम दिल्ली में भी कार्य बहुत अधिक बढ़ गया है और वहां भी भक्तों का समूह नित्य प्रति भेंट करने आता है। पूज्य गुरुदेव के लिए तो उनका हर शिष्य उन्हें प्यारा है, क्योंकि संसार में सबसे अनूठा संबंध गुरु-शिष्य का सम्बन्ध ही है।

इस स्थिति में कार्यालय द्वारा पूज्य गुरुदेव को निवेदन किये जाने पर भविष्य के लिए निम्न कार्यक्रम प्रति माह के लिए निश्चित किया गया है—

प्रतिमाह १ तारीख से १० तारीख तक — गुरु शक्तिपीठ जोधपुर
प्रतिमाह ११ तारीख से २० तारीख तक — गुरुधाम दिल्ली
प्रतिमाह २१ तारीख से ३० तारीख तक — गुरु शक्तिपीठ जोधपुर

विशेष परिस्थितियों में कार्यक्रमों में थोड़ी बहुत फेरबदल हो सकता है, अतः भेंट हेतु आने वाले साधकों से निवेदन है कि वे उपरोक्त स्थान पर जाने से पहले फोन अवश्य कर लें।

फोन नं० : जोधपुर—३२२०६
फोन नं० : दिल्ली—७१८२२४८

वर्ष १९९३ के

प्रारम्भिक साधनात्मक शिविर

साधना एक सतत प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को शुद्धतम रूप से अपनाने से ही जीवन का श्रेष्ठ निर्माण हो सकता है। जब साधक अपने घर में बैठ कर साधना करता है तो वह एक विशेष प्रकार के वातावरण से घिरा रहता है, वह चाह कर भी उस वातावरण के प्रभाव को, उन बन्धनों को तोड़ कर मुक्त नहीं हो सकता। उस वातावरण का दोष, उस स्थान का दोष एवं एक अज्ञात भय, आशंका उसे घेरे रहते हैं और मैंने यहां तक देखा है कि कई साधक तो अपना नित्य का साधना कार्य-क्रम सम्पन्न करते हैं, तो एक प्रकार से छिप कर करते हैं, मानो वे कोई अपराध कर रहे हैं, जबकि होना यह चाहिए कि जो भी कार्य करें डंके की चोट से करें, अपने पूरे आत्म विश्वास के साथ, अपनी समस्त इन्द्रियों को जाग्रत करते हुए सम्पन्न करें।

इन सब स्थितियों को देखते हुए पूज्य गुरुदेव ने साधनात्मक शिविर निरन्तर आयोजन करते हेतु स्वीकृति प्रदान की है। साधनात्मक शिविर में वातावरण उन्मुक्त, निश्छल, शक्ति से परिपूर्ण और बन्धनों से परे होता है, वहां न तो ड्यूटी की चिन्ता होती है, न घर परिवार की। बस एक शान्त साधनात्मक, मन्त्रात्मक शक्ति बीजों से जाग्रत शिवम् वातावरण होता है, जहां नित्य प्रति सद्गुरुदेव से निर्देश प्राप्त होते हैं, ज्ञान प्राप्त होता है, और जब हजार-हजार कण्ठों से एक साथ मन्त्र घोष होता है, तो शक्ति को जागृत होना ही पड़ता है, साधना में सफलता मिलती ही है।

आने वाले समय में निम्न चार साधनात्मक शिविर निश्चित किये गये हैं, इस प्रत्येक महायज्ञ में आप सबको आना है, यह निमन्त्रण है पूज्य गुरुदेव का।

१-बसन्त पंचमी—वागीश्वरी नव निधि चैतन्य शिविर—२८ जनवरी ९३।
स्थान—गुरुधाम-३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली-११००३४।

२-सिद्धिप्रद महाकालेश्वर साधना शिविर—दिनांक-१७, १८, १९ फरवरी ९३। स्थान-उज्जैन

३-वासन्तीय नवरात्रि महोत्सव—२४ मार्च से ३१ मार्च ९३ तक। स्थान-जोधपुर।

४-गुरुजन्म दिवस महोत्सव—१९, २०, २१ अप्रैल। स्थान-३०६, कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली।

इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी जोधपुर पत्र भेज कर प्राप्त कर सकते हैं।

पूज्य गुरुदेव ने कहा है कि इस वर्ष प्रत्येक माह अलग-अलग प्रदेश में शिविर का आयोजन किया जायेगा, अतः यह परीक्षा का समय है, 'सिद्धाश्रम साधक परिवार' की भारतवर्ष में फैली शाखाओं के लिए और ही सुअवसर है, पूज्य गुरुदेव को अपने शहर में आमन्त्रित कर जीवन में नया अध्याय जोड़ने का। ●

नव वर्ष का स्वागत करना है
दिव्य शक्ति पूजा अनुष्ठान से
जो
प्राणों में शक्ति का प्रवाह कर सकता है

नये वर्ष को यदि हम उल्लास, उमंग और उत्साह के साथ प्रारम्भ करते हैं, तो वह पूरा वर्ष हमारे लिए उमंग और उत्साह से भरा हुआ होता है, शास्त्रों में वर्ष का प्रारम्भ प्रथम दिन के सूर्योदय से ही माना जाता है।

क्या आप वर्ष का प्रारम्भ जुआ खेल कर, क्लब में नाच गा कर, हो हल्ला मचा कर, शराब पीकर या उछल-कूद करके करना चाहते हैं, या इसी प्रयोजन के लिए जिस अनुष्ठान को शास्त्रों में बताया है, जिस अनुष्ठान के द्वारा हम एक ही घण्टे में आगे के ३६५ दिनों को संवार सकते हैं, इन विशेष प्रयोगों के द्वारा प्रत्येक दिन आनन्द उमग और उत्साह से सराबोर कर सकते हैं, इन दोनों में से कौन सा चुनाव आपके लिए लाभप्रद है, यह आप स्वयं निर्णय कीजिये।

यह बात अच्छी तरह से समझ लीजिये कि भोग के द्वारा केवल रोग की ही प्राप्ति हो सकती है, परन्तु साधना के द्वारा जीवन की पूर्णता और असीम आनन्द की अनुभूति एवं प्राप्ति सम्भव है।

"प्राण तोषिणी अनुष्ठान" अत्यन्त सरल एवं सुविधा-जनक है और कोई भी साधक इस प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न कर सकता है, जनवरी के पहले दिन जब नया वर्ष प्रारम्भ होता है, तब भी इस अनुष्ठान को सम्पन्न कर सकते हैं और आगे चलकर जब नया विक्रमी संवत् २०५० चैत्र सुदी प्रतिपदा (२४ मार्च १९९३ दिन बुधवार) को प्रारम्भ होगा, तब आप इसी अनुष्ठान को दूसरी बार भी सम्पन्न कर सकते हैं, शास्त्रों में कहा गया है कि जितने नववर्ष प्रचलित हों, उन सभी नववर्षों के अवसर पर यह प्रयोग सम्पन्न करना ही चाहिए।

और इस अनुष्ठान में कोई ज्यादा समय नहीं लगता कोई ज्यादा झंझट या परेशानी नहीं है यदि आप इस अनुष्ठान को सम्पन्न करें तो मुश्किल से एक या डेढ़ घण्टे में यह अनुष्ठान सम्पन्न हो सकता है।

पत्रिका पाठकों के लिए इस दुर्लभ अनुष्ठान को मैं आगे की पंक्तियों में स्पष्ट कर रहा हूं और मेरी राय में प्रत्येक साधक को यह अनुष्ठान पूर्णता के साथ सम्पन्न करना ही चाहिए—

साधना प्रयोग

प्रत्येक परिवार के मुखिया को चाहिए कि वह सूर्योदय से पहले उठ जांय और अपने परिवार के अन्य सदस्यों को भी जगा दें, फिर सभी स्नान आदि से निवृत्त होकर सुन्दर और उत्तम वस्त्र धारण करें, इसमें किसी भी प्रकार के वस्त्र धारण किये जा सकते हैं, इसके बाद दरी या जाजम बिछा कर अकेले या अपनी पत्नी के साथ बैठ सकते हैं, ज्यादा अच्छा तो यह होगा कि पूरा परिवार एक साथ बैठे।

यह प्रयत्न होना चाहिए कि जिस समय सूर्य अपनी पहली किरण से संसार को प्रकाशवान करते हैं, उसी समय यह प्रयोग प्रारम्भ किया जा सकता है, यो सूर्योदय से ९ बजे के बीच साधना के लिए बैठ जाना चाहिए।

इसके अतिरिक्त सामने जलपात्र, केसर, नारियल, पुष्प, फल और प्रसाद आदि पहले से ही मंगा कर रख लेने चाहिए, साथ ही साथ '**रक्षात्मक प्राण तोषिणी माला**'' भी अपने सामने किसी पात्र में रख देनी चाहिए यह माला विशेष मन्त्रों से गुंथी हुई होती है, और अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण माला कही जा सकती है। पूरे वर्ष पारिवारिक सुख शान्ति उन्नति और परिवार की पूर्ण रक्षा की दृष्टि से यह प्राण तोषिणी माला अत्यन्त श्रेष्ठ मानी गई है। साधकों को चाहिए कि वे स्वयं तो इस अनुष्ठान के बाद यह माला अपने गले में धारण करें ही पर यदि सम्भव हो तो परिवार के जितने सदस्य हों, उन सभी सदस्यों के भी गले में एक-एक माला पहना देनी चाहिए जो कि आगे के पूरे वर्ष भर के लिए सभी दृष्टियों से उन्नतिप्रद, स्वास्थ्यप्रद एवं रक्षात्मक होती है।

अधिकतर साधक अपने घर में जितने पुत्र-पुत्रियां हैं, उन सबके गले में और अपनी पत्नी तथा अपने स्वयं के लिए भी इस प्रकार की मालाएं धारण कर लेते हैं।

साधना अनुष्ठान

सबसे पहले साधक अपने सामने किसी पात्र में केसर से स्वस्तिक का चिन्ह बना कर उस पर गणपति को स्थापित करें और उसके बाद स्वयं के ललाट पर केसर का तिलक करें साथ ही गणपति के सामने घी का दीपक और अगरबत्ती लगा दें, यदि सम्भव हो तो दीपक में थोड़ा इत्र भी मिला दें।

इसके बाद सामने एक चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक कलश स्थापित करें और उसमें दूसरे पात्र में से थोड़-थोड़ा जल लेकर निम्न सूर्य और चन्द्र कलाओं का उच्चारण करते हुए डालें—

चन्द्र कलाएं

१-अमृता, २-मानदा, ३-पूषा, ४-तुष्टि ५-पुष्टि, ६-रति, ७-धृति, ८-शशिनी, ९-चन्द्रिका, १०-कान्ति, ११-ज्योत्सना, १२-श्री, १३-प्रीति, १४-अंगना, १५-पूर्णा, १६-पूर्णामृता।

सूर्य कलाएं

१-तपिनी, २-तापिनी, ३-धूम्रा, ४-मारीचि, ५-ज्वालिनी, ६-रुचि, ७-सुषुम्ना, ८-भोगदा, ९-विश्वा, १०-बोधिनी, ११-धारिणी, १२-क्षमा।

फिर कलश के ऊपर बड़ या पीपल के पत्ते रख कर उसके ऊपर नारियल रखें और हाथ जोड़ कर भगवती प्राण तोषिणी का ध्यान करें—

ध्यान

अर्कोन्मुक्त शशांक-कोटि सदृशीमापीन-तुंग-स्तनीम्।
चन्द्रार्द्धांकित-मस्तकां मधुम्मदादालोल-नेत्र त्रयाम्॥

विभ्राणामनिशं वरं जप वटीं विद्यां कपालं करे।
राधां यौवन गर्वितां लिपि तनुं वागीश्वरीमाश्रये ।।

इसके बाद नारियल हटा कर उस कलश के जल से अपना और अपने परिवार के सभी सदस्यों का अभिषेक करे। अभिषेक का तात्पर्य यह है कि सूर्य और चन्द्र कलाओं से युक्त अमृतमय जल का तीन-तीन आचमन जल घर के सभी सदस्य पिएं जिससे कि आन्तरिक शुद्धि हो सके तथा उस जल को सभी सदस्यों के शरीर पर भी छिड़कें जिससे कि उनका सारा शरीर दिव्य, तेजस्विता-युक्त एवं रक्षात्मक बन सके।

इसके बाद कलश को वापिस अपने स्थान पर रख दें, और एक तरफ एक छोटे से पात्र में अपनी कुलदेवी या अपने इष्ट को स्थापित करें, यहां कुलदेवी या इष्ट से तात्पर्य है-आप और आपका परिवार जिस देवता को या जिस देवी को मानता है या परम्परा से जिस देवी की पूजा आपके घर में होती है, उस देवी को या इष्ट को स्थापित कर उनका संक्षिप्त पूजन करें, उसके ऊपर कुंकुंम केसर लगावें, पुष्प समर्पित करें और प्रसाद चढ़ावें।

फिर दूसरी तरफ एक अलग पात्र में चावलों की ढेरी बनाकर उस पर सुपारी रख कर 'कुण्डलिनी' को स्थापित करें, कुल कुण्डलिनी का तात्पर्य शरीर के अन्दर स्थित सभी सातों चक्रों का जागरण हो सके और इस प्रकार से इस वर्ष में ही हम अपने इष्ट के साक्षात दर्शन कर सकें, और इस वर्ष में हमारी जो भी इच्छाएं हों वे पूरी हो सकें, इसलिए इस कुल कुण्डलिनी की स्थापना होती है। ये सातों चक्र निम्नवत् हैं—

१-मूलाधार, २-स्वाधिष्ठान ३-मणिपुर, ४-अनाहत,
५-विशुद्ध, ६-आज्ञा और ७-सहस्रार चक्र।

कुण्डलिनी की स्थापना करने के बाद उस पर कुंकुंम केसर, अक्षत, पुष्प आदि समर्पित कर हाथ जोड़ कर उसकी स्तुति करें—

कुण्डलिनी स्तुति

ॐ नमस्ते देव देवेशि ! योगीश प्राण वल्लभे।
सिद्धिदे ! वरदे ! मात ! स्वयम्भू लिंग-वेष्टिते ।।
ॐ प्रसुप्त भुजंगाकारे ! सर्वथा कारण प्रिये !
काम कलान्विते देवि ! ममाभीष्टं कुरुष्व च ।।
ॐ असारे घोर संसारे भव-रोगात् कुलेश्वरि !
सर्वदा रक्ष मां देवि ! जन्म संसार सागरात् ।।

इसके बाद साधक अपने सामने अपने गुरु के चित्र को किसी पात्र में स्थापित कर संक्षिप्त पूजन करें, साथ ही साथ गुरु चित्र के सामने चावलों की ढेरी बना कर अपने पूर्वजों और ऋषियों को स्मरण करते हुए उनका आह्वान करें, जिससे कि वे पूरे वर्ष भर अपनी तपस्या और शक्ति से आपके जीवन को पूर्णता दे सकें।

इन ऋषियों को गुरु चित्र के सामने ही चावलों की ढेरी बना कर निम्न पंक्तियों का उच्चारण करते हुए उनका आह्वान कर स्थापन करें—

ऋषि आवाहन

ब्रह्मा चकाश्यपो विप्रः सनकश्च सनन्दनः।
सनत् सनातनी विप्री नारदः कपिलस्तथा ।।
मरिचि अत्रिः पुलह पुलस्त्यो गौतम क्रतुः।
भृगुर्दक्षः प्रचेतश्च वशिष्ठो वाल्मीकीस्तथा ।।
द्वैपायनी भारद्वाजः शुक्रो जेमिनीरेव च।
विद्वरथः शुनः शेफो जातु कर्णश्च रौरवः ।।
और्वः संवर्तकः शुक्र सुराचार्यो बृहस्पति।
चन्द्र सूर्यो बुधः श्रीमान् यज्ञ सूत्रस्य ग्रन्थिषु ।।
तिष्ठन्तु मम वामांशे वाम स्कन्धे त्वहर्निशम्।
ब्रह्माद्याः देवताः सर्वा यज्ञ सूत्रस्य देवता ।।

इसके बाद अपने गुरु सहित इन सभी ऋषियों का संक्षिप्त पूजन-जल, कुंकुम, अक्षत, पुष्प और प्रसाद से करें।

इसके बाद एक पात्र में गणपति को स्थापित करें और उनकी संक्षिप्त पूजा करें तथा उनसे प्रार्थना करें कि वे ऋद्धि-सिद्धि सहित घर में स्थापित हों और पूरे वर्ष भर जीवन के सभी विघ्नों का नाश करते हुए पूर्ण मंगल करते रहें।

साथ ही साथ उनके सामने ही चावलों की आठ ढेरियां बनाएं और इन ढेरियों पर एक-एक सुपारी रखें, और उनके सामने **"प्राण तोषिणी मालाएं"** रख दें, इन मालाओं का संक्षिप्त पूजन करें जसा कि मैं पहले ही बता चुका हूं कि आप अपने स्वयं के लिए या पूरे परिवार के लिए इन प्राण तोषिणी मालाओं को प्राप्त कर उनका संक्षिप्त पूजन कर सकते हैं, इन पर चावल छिड़कते हुए निम्न अष्टमातृकाओं की स्थापना निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए इन मालाओं में करें—

१-ब्राह्मी

दण्डं कमण्डलु करमक्ष-सूत्राभयंतथा।
विभ्रती कनकच्छायां ब्राह्मी कृष्णाजिनीज्वला॥

२-महेश्वरी

शूलं कमलां परशुं नृणां पौतं मनोहरम्।
वहन्ती हेम संकाशा ध्येया माहेश्वरी शुभा॥

३-कौमारी

अंकुशं दण्ड खट्वांग पाशं च दधती करेः।
ध्येया बन्धूक संकाशा कौमारी शुभदायिनी॥

४-वैष्णवी

चन्द्रं घण्टं गदा खड्गं विभ्रतीं सुमनोहरां।
तमालं श्यामला ध्येया वैष्णवी शुभदायिनी॥

५-वाराही

मूशलं कर वालं च खेटकं दधती हलम्।
करं श्चतुर्भिर्वाराही ध्येता काल धनच्छविः॥

६-इन्द्राणी

अंकुशं तोमरं विद्युत कुलिशं विभ्रती करैः।
इन्द्रनील-निमेन्द्राणी ध्येया सर्व समृद्धिदा॥

७-चामुण्डा

शूलं कपालं नृ शिरः कपालं दधती करैः।
मुण्डखड्गमण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्त विग्रहा॥

८-महालक्ष्मी

अक्षं स्रजं बीजपुरं कमलां पंकजं करैः।
वहन्ती हेम संकाशा महालक्ष्मी हरि प्रिया॥

प्राण तोषिणी मन्त्र

ॐ ऐं ह्लीं ह्लां ह्लीं ह्लूं ह्लैं ह्लौं ह्लः जगन्मातः सिद्धि देहि देहि स्वयम्भू लिंगमाश्रितायै विद्युत कोटि-प्रभायै महा-बुद्धि प्रदायै सहस्र दल गामिन्यै नमः॥

उपरोक्त प्राण तोषिणी मन्त्र की एक माला नित्य जप करें।

अन्त में साधक अपनी बेटियों और बहुओं को यथोचित उपहार देकर उन्हें सन्तुष्ट करें।

इस प्रकार पूरे परिवार सहित नये उल्लास के साथ नये वर्ष का शुभारम्भ करें और पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त कर परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करें कि जीवन का हर दिन नवीन ताजगी लिये हुए उल्लास एवं आनन्द से छलकता हुआ आता रहे।

आद्याशक्ति

भुवनेश्वरी साधना रहस्य

तांत्रिक ग्रन्थों में भगवती भुवनेश्वरी को आद्या शक्ति कहा गया है, और जो भी व्यक्ति तन्त्र अथवा मन्त्र में सफल होना चाहता है उसे भगवती भुवनेश्वरी की उपासना करनी ही पड़ती है, उसके बाद ही साधना क्रम आगे बढ़ सकता है।

महर्षि अगस्त्य से लगा कर विश्वामित्र, कणाद, शंकराचार्य और गुरु गोरखनाथ तक ने यह माना है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही जीवन में पूर्ण सफलता हेतु भगवती भुवनेश्वरी साधना आवश्यक है।

शाक्त प्रमोद के अनुसार जीवन की सर्वश्रेष्ठ और महत्वपूर्ण साधना भुवनेश्वरी साधना ही है, जीवन में अन्य साधनाएं कर सकें या न कर सकें, जीवन में अन्य महाविद्याओं को सिद्ध न कर सकें, पर साधक को अपने जीवन में भुवनेश्वरी साधना तो अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए।

उपरोक्त 'शाक्त प्रमोद' के प्रामाणिक श्लोक के अनुसार इस दिवस पर भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न करने पर निम्न लाभ निश्चय ही प्राप्त होते हैं—

- इस साधना को सम्पन्न करने पर गृहस्थ व्यक्ति भी उसी प्रकार योगी कहला सकता है, जिस प्रकार भगवान श्रीकृष्ण पूर्ण गृहस्थ और सोलह हजार रानियों के पति होते हुए भी योगीराज कहलाये थे।
- इस साधना को सिद्ध करने पर निश्चय ही व्यक्ति में विशेष क्षमता आ जाती है और वह अपने शरीर को लघु रूप बना कर संसार में कहीं पर भी विचरण कर सकता है और वापिस अपने मूल आकार में आ सकता है, जिस प्रकार हनुमानजी ने लंका जाते समय अत्यन्त लघु रूप धारण कर लिया था और समुद्र पार करने के बाद अपने मूल रूप में आ गये थे, यह इस साधना की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।
- इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति दीर्घायु सुखी और वाणी सिद्ध हो जाता है, वह दूसरों

को पूर्ण रूप से प्रभावित करने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

- ऐसा व्यक्ति धनवान तो होता ही है, साथ ही साथ अनेक गुणों से विभूषित हो कर अपने व्यापार को कई गुना बढ़ा देता है।

- इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि दूसरे प्रकार में यह गुरु साधना ही है और इस साधना को सम्पन्न करने से स्वतः गुरु सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

- इस साधना को सम्पन्न करने पर संसार में जितने भी मन्त्र हों, उन मन्त्रों में सिद्धि मिल जाती है, और वह कुबेर के समान धनवान तथा सम्पत्तिवान बन जाता है।

- यदि कोई स्त्री दुर्भाग्यशाली हो और उसके पुत्र नहीं हो, या पुत्र आज्ञाकारी न हो तो घर का कोई सदस्य इस साधना को सम्पन्न करता है तो उसका दुःख समाप्त हो जाता है और वह पुत्रवती हो जाती है।

- इस साधना को सिद्ध करने से दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ भगवती भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती है और उसके साक्षात् दर्शन हो पाते हैं।

- शास्त्रों में कहा गया है, कि भगवती भुवनेश्वरी आद्य शक्ति है, अतः इसे सिद्ध करने पर महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी तीनों महादेवियां स्वतः सिद्ध हो जाती हैं।

वस्तुतः भुवनेश्वरी साधना जीवन की अनुपम और अद्वितीय साधना है और शास्त्रों में भुवनेश्वरी साधना के बारे में जितना लिखा गया है उतना और किसी साधना के बारे में नहीं कहा गया है, समस्त तांत्रिकों, योगियों और साधकों ने यह स्पष्ट रूप से बताया है, कि भुवनेश्वरी साधना ही जीवन की पूर्ण और प्रामाणिक साधना है।

भुवनेश्वरी साधना के दो प्रयोग मुख्य है, इनमें प्रथम प्रयोग तांत्रोक्त प्रयोग है और दूसरा मांत्रोक्त प्रयोग।

तांत्रोक्त प्रयोग रक्षात्मक प्रयोग है जिसके प्रभाव स्वरूप साधक को जीवन में किसी प्रकार की क्षति नहीं पहुंच सकती, शत्रु उस पर कितना ही प्रहार करें, पीड़ा पहुंचाने का प्रयास करें, लेकिन भुवनेश्वरी साधक विजय ही प्राप्त करता है।

तांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना रहस्य

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नान संध्या आदि से निवृत्त होकर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाय इस साधना में सफेद ऊनी आसन या मृग चर्म का प्रयोग किया जाना चाहिए। साधक स्वयं सफेद धोती धारण करे, साधिका यदि इस साधना को सम्पन्न करना चाहे तो सफेद साड़ी पहिने, प्रातःकाल अपने सिर के बाल धो ले और बिना तेल लगाये बालों को खुला रखे।

इसके बाद साधक अपने सामने **'तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यन्त्र'** को स्थापित करें जो कि महर्षि विश्वामित्र द्वारा प्रणीत प्राण संजीवनी मुद्रा से सिद्ध एवं प्राणप्रतिष्ठा युक्त हो। वास्तव में ही इस प्रकार से प्राण प्रतिष्ठित यन्त्र ही प्रयोग में लाया जा सकता है, यद्यपि इस प्रकार से प्राणप्रतिष्ठा करना अत्यन्त कठिन कार्य है और बहुत कम पण्डित ही इस प्रकार के यन्त्र को प्राण प्रतिष्ठित एवं मन्त्र सिद्ध कर पाते हैं, पर ऐसा यन्त्र कई-कई पीढ़ियों के लिए साधक के लिए लाभदायक बना रहता है।

अपने सामने लकड़ी का बाजोट बिछा कर उस पर सफेद रेशमी वस्त्र बिछाएं और उस पर थाली रखें, थाली के चारों कोनों पर कुंकुम से पंच कोण बनावें और थाली के मध्य में त्रिकोण अंकित करें। इसके बाद थाली के मध्य में ही इस प्रकार का मन्त्रसिद्ध यन्त्र स्थापित करें, और उसे **"ॐ भुवनेश्वर्यै नमः"** मन्त्र का उच्चारण करते हुए शुद्ध जल से स्नान करावें, इनके बाद इसी नाम का उच्चारण करता हुआ, उसे दूध से, दही से, घृत से,

मधु से और शर्करा से स्नान करावें फिर इन पांचों चीजों को मिलाकर पंचामृत से स्नान करावें, स्नान कराते समय बराबर इसी मन्त्र का उच्चारण करता रहे। इसके बाद पुनः शुद्ध जल से यन्त्र को स्नान करा कर अलग किसी पात्र में रख दें, और उस पात्र का जल अलग कटोरे में ले कर एक तरफ रख दें, जिसे पूजा समाप्त होने के बाद जमीन में गाड़ दें।

इसके बाद उस थाली को मांज कर पोंछ कर सिन्दूर से मध्य में पंच कोण बनावें और थाली के अन्दर ही चारों कोनों पर सिन्दूर से ही त्रिकोण अंकित करे और मध्य में चावल की ढेरी बनाकर उस पर यन्त्र को स्थापित करे।

इसके बाद सामने अगरबत्ती व शुद्ध घी का दीपक प्रज्वलित करें और यन्त्र पर जहां दस स्थानों पर सिन्दूर की दस बिन्दियां लगाई थी, वहां से थोड़ा-थोड़ा सिन्दूर लेकर अपने ललाट के मध्य में तिलक करे।

इसके बाद थाली में जो चारों कोनों पर त्रिकोण बनाये हैं, उनमें से प्रत्येक त्रिकोण पर छोटी-छोटी चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक पर एक-एक **'लघु नारियल'** स्थापित करें, और लघु नारियल पर सिन्दूर का तिलक करे। यन्त्र के सामने **'दस हकीक नग'** पत्थर रख दे, जो कि मन्त्र सिद्ध हो, और प्रत्येक हकीक नग पर सिन्दूर का तिलक करे, यह दस महा शक्तियों के प्रतीक चिन्ह है। इसके बाद यन्त्र के बाईं ओर चावल की ढेरी बना कर **'मोती शंख'** स्थापित करें और दाहिनी ओर चावल की ढेरी बनाकर **'सिद्धि फल'** स्थापित करें। फिर इन दोनों की संक्षिप्त पूजा करें, सिन्दूर का तिलक करें और पुष्प समर्पित करें।

इसके बाद यन्त्र के सामने दूध का बना हुआ प्रसाद अर्पित करें तथा एक पात्र में पंचामृत बना कर रखें (पंचामृत-दूध, दही, घी, शहद और शक्कर को मिलाकर बनाया जाता है) इसके पास ही पानी से भरा हुआ लोटा रख दें और फिर प्रयोग प्रारम्भ करें।

भुवनेश्वरी तांत्रोक्त सपर्या प्रयोग

साधक सबसे पहले अपनी चोटी के गांठ लगावें, अपने अंगूठे से अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और फिर सिन्दूर का तिलक अपने सिर के मध्य भाग में हृदय तथा नाभि पर भी करें। इसके बाद हाथ में जल लेकर संकल्प करें।

विनियोग

ॐ अस्य भुवनेश्वरी पंजर मन्त्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः। गायत्री छन्दः। श्री भुवनेश्वरी देवता। हं बीजं। ईं शक्तिः। रं कीलकं। सकलमनोवांछित-सिद्धयर्थे पाठे विनियोग.॥

ऐसा कह कर हाथ में लिया जल भूमि पर छोड़ दें, और इसके बाद न्यास करें—

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति-ऋषये नमः शिरसि।
गायत्री-छन्दसे नमः मुखे।
श्री भुवनेश्वरी-देवतायै नमः हृदि।
ह बीजाय नमः गुह्ये।
ईं शक्तये नमः नाभौ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे।

न्यास का तात्पर्य है कि उसमें शरीर के जिन-जिन अंगों का वर्णन आया है, साधक मन्त्र का उच्चारण करते हुए शरीर के उस-उस अंग को दाहिने हाथ से स्पर्श करे, जिससे कि भगवती भुवनेश्वरी पूर्ण रूप से शरीर के सभी अंगों में समाहित हो सके।

इसके बाद साधक षडंग न्यास करे।

षडंग न्यास अंग न्यास		कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वषट्	नेत्र-त्रयाय वौषट्
,,	करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार के न्यास करने के बाद दोनों हाथ जोड़कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करे।

ध्यान

ध्यायेद् ब्रह्मादिकानां कृत-जनि-जननी योगिनीं योगयोनिम् ।
देवानां जीवनायोज्ज्वलित-जय-परं ज्योतिरूपांगधात्रीम् ।।
शंख चक्रं च बाणं च मधुरपि दधतीं दोश्चतुष्काम्बुजातैः ।
मायामाद्यां विशिष्टां भव-भव-भुवनां भू-भवा भार-भूमिम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक **'स्फटिक माला'** से वहीं पर बैठे-बैठे निम्न दुर्लभ गोपनीय मन्त्र की २१ माला मन्त्र जप करें।

भगवती भुवनेश्वरी तांत्रोक्त पिंजर महामन्त्र

।। ॐ क्रों श्रीं ह्रीं ऐं सौं ह्रीं नमः ।।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब साधक दस बत्तियां लगा कर भगवती भुवनेश्वरी की आरती सम्पन्न करे, या जगदम्बा अथवा दुर्गा की आरती स्मरण हो तो उसे करे, इसके बाद भगवती भुवनेश्वरी के सामने जो प्रसाद चढ़ाया हुआ है, वह थोड़ा सा स्वयं भक्षण करे और अपने परिवार वालों को बांटे।

इसके बाद पूर्ण सिद्धि के लिए किसी पात्र में समिधाएं (लकड़ियां) जला कर इसी मन्त्र की पूरी एक सौ आहुतियां दे दें तब यह प्रयोग पूर्ण माना जाता है।

भुवनेश्वरी यन्त्र के आस-पास जो वस्तु नारियल आदि सामग्री है, उसे एक सफेद रेशमी वस्त्र में बांध कर घर के भण्डार गृह में या जहां धनराशि आदि रखी जाती है, अथवा तिजोरी में सम्मानपूर्वक स्थापित कर दें और यन्त्र को पूजा स्थान में सफेद रेशमी वस्त्र बिछा कर स्थापित करें।

इसके बाद यदि श्रद्धा हो तो एक ब्राह्मण को या एक कुंवारी कन्या को भोजन करा दें अथवा मन्दिर में दान दक्षिणा आदि भिजवा दें।

भुवनेश्वरी मांत्रोक्त साधना रहस्य

वाणी सिद्धि कुबेर साधना एवं दुर्भाग्य नाश के लिए मांत्रोक्त भुवनेश्वरी साधना सम्पन्न की जानी आवश्यक है।

मैं आगे के पृष्ठों में गोपनीय और दुर्लभ भुवनेश्वरी साधना रहस्य को स्पष्ट कर रहा हूं, इसका मन्त्र अपने आप में अत्यन्त सरल है और कोई भी कम पढ़ा लिखा साधक भी इस साधना को सम्पन्न कर सकता है।

साधक प्रातःकाल उठ कर स्नानादि से निवृत्त हो श्वेत वस्त्र धारण कर स्वयं या अपनी पत्नी के साथ पूजा स्थान में बैठ जांय और अपने सामने **"त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र"** को स्थापित कर दें, यह अपने आप में दुर्लभ और अद्वितीय यन्त्र है जिसकी साधकों ने अत्यधिक प्रशंसा की है, इस यन्त्र का निर्माण जटिल है, परन्तु पत्रिका कार्यालय ने इस अवसर पर बहुत ही कम यन्त्रों का निर्माण कराया है, जिससे कि साधक ऐसा दुर्लभ यन्त्र अपने घर में स्थापित कर सकें शास्त्र में तो यन्त्र निर्माण के बारे में कहा गया है कि यह यन्त्र जटिल है, कठिन है और सौभाग्यशाली व्यक्तियों के घर में ही ऐसा यन्त्र स्थापित हो सकता है, इसके बारे में बताया है—

पद्ममष्टदलम्बाह्ये वृत्तं षोडशभिर्दलैः
विलिखेत्कर्णिकामध्ये षट्कोणमतिसुन्दरम्
चतुरस्रञ्चतुर्द्वारमेवम्मण्डलमालिखेत्

उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ कर आप अनुमान लगा सकेंगे, कि इस यन्त्र का निर्माण कितना अधिक जटिल और कठिन है, इसके साथ ही साथ भगवती भुवनेश्वरी का प्रामाणिक चित्र भी अपने पूजा स्थान में इस दिन स्थापित कर देना चाहिए।

इसके बाद यन्त्र को शुद्ध जल से धो कर पौंछें और किसी दूसरे पात्र में केसर से "ह्रीं" अक्षर लिख कर उस पर यन्त्र को स्थापित करें, यन्त्र को उस पात्र में रख कर उसके चारों कोनों पर "ह्रीं" अंकित करें और फिर साधक उसकी प्राणप्रतिष्ठा करें।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ह्रौं हंसः मम शरीरे अमुक देवतायाः प्रणाः इह प्राणाः, जीव इह स्थितः, सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि, वाक्-मन-श्चक्षु: श्रोत्र-जिह्वा प्राण पाद पायूपस्थानि इहैवा-गत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।।

ऐसा करने के बाद तांत्रोक्त रूप से भुवनेश्वरी सिद्ध करने के लिए अपने आसन का शोधन करें, आसन के नीचे जो भूमि है, उस भूमि को दाहिने हाथ से छूकर यह मन्त्र पढ़ें—

ॐ पवित्र-वज्र-भूमे ! हुं फट् स्वाहा ।

इसके बाद भूमि को मन्त्र सिद्ध करने के बाद भूमि पर जल अक्षत चढ़ा कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका पूजन करें—

ॐ आधार-शक्त्यै नमः जलाक्षत-चन्दनं समर्पयामि ।

आधार शक्ति अर्थात् भूमि की पूजा करने के बाद आसन का शोधन करें, इसके लिए पहले दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ जल भूमि पर छोड़ दें—

ॐ अस्य आसन शोधन मन्त्रस्य श्री मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मोदेवता आसनोपवेशने विनियोगः ।।

विनियोग करने के बाद आसन के ऊपर दाहिना हाथ रख कर नीचे लिखा हुआ मन्त्र उच्चारण करें—

ॐ पृथ्वी ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु आसनम् ।।

इसके बाद अपनी दाहिनी ओर चावलों की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी रखें और कुंकुम का तिलक करें, उसे भैरव मान कर उसके सामने गुड़ का भोग लगावें, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें कि वे निरन्तर साधक की रक्षा करते हुए सभी विघ्नों का नाश करें—

ह्रीं तीक्ष्ण-दंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्त दहनोपम ! भैरव नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

ऐसा करने के बाद साधक अपना रक्षा विधान निम्न प्रकार से करें—

तीन बार दोनों हाथों की हथेली से आवाज करते हुए "फट्" शब्द करें और बाएं पैर की एड़ी से तीन बार प्रहार करें इससे भूमि पर होने वाले विघ्नों का निवारण होता है।

भुवनेश्वरी मन्त्र प्रयोग

अपने सामने जो दुर्लभ भुवनेश्वरी यन्त्र रखा है और जो सामने भुवनेश्वरी चित्र स्थापित किया है, उसके सामने साधक निम्न प्रकार से विनियोग, न्यास एवं ध्यान करें—

विनियोग

ॐ अस्य श्री भुवनेश्वरी हृदय स्तोत्रस्य श्री शक्तिः ऋषिः । गायत्री छन्दः । श्री भुवनेश्वरी देवता । हं बीजं । ईं शक्तिः । रं कीलकं सकल-मनोवांछित-सिद्धयर्थ पाठे विनियोगः ।।

ऋष्यादिन्यास

श्री शक्ति ऋषये नमः शिरसि ।
गायत्री छन्दसे नमः मुखे ।
श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः हृदि ।
हं बीजाय नमः गुह्ये ।
ईं शक्तये नमः नाभौ ।
रं कीलकाय नमः पादयोः।
सकल-मनोवांछित सिद्धयर्थे पाठे विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

षडंग न्यास	अंग न्यास	कर न्यास
ह्रीं श्रीं ऐं	अंगुष्ठाभ्यां नमः	हृदयाय नमः
,,	तर्जनीभ्यां स्वाहा	शिरसे स्वाहा
,,	मध्यमाभ्यां वषट्	शिखायै वषट्
,,	अनामिकाभ्यां हुं	कवचाय हुं
,,	कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्	नेत्रत्रयाय वौषट्
,,	करतल करपृष्ठाभ्यां फट्	अस्त्राय फट्

इस प्रकार न्यास के बाद साधक दोनों हाथ जोड़ कर भगवती भुवनेश्वरी का ध्यान करें—

सरोजनयनां चलत् कनक कुण्डलां शैशवी,
घनुर्जप वटी करामुदित सूर्य कोटि प्रभाम् ।
शशांक कृत शेखरां शव शरीर सस्था शिवाम्,
प्रातः स्मरामि भुवनेश्वरीं शत्रु गति स्तम्भनीम् ।।

ध्यान करने के बाद साधक 'स्फटिक माला' से मन्त्र जप प्रारम्भ करे, पर मन्त्र जप से पूर्व भुवनेश्वरी महायन्त्र के सामने शुद्ध घृत का दीपक और अगरबत्ती जला ले ।

इसके बाद शान्त मनोयोग पूर्वक भुवनेश्वरी बीज मन्त्र का जप करें, यह मन्त्र एक अक्षर का है और शास्त्रों के विधान के अनुसार यदि भुवनेश्वरी साधना दिवस के दिन इस मन्त्र की १०८ माला मन्त्र जप हो जाता है, तो निश्चय ही भुवनेश्वरी सिद्ध हो जाती ।

पढ़ने में १०८ माला बड़ी लगती है, एक वर्ण का मन्त्र होने के कारण इस पूरे मन्त्र जप एवं साधना मे चार या पांच घण्टे से ज्यादा समय नहीं लगता ।

भुवनेश्वरी मूल मन्त्र

"ह्रीं"

उपरोक्त मन्त्र अपने आप में सर्वश्रेष्ठ और अद्वितीय मन्त्र है, इस मन्त्र को चैतन्य करने के लिए इस मन्त्र से पहले पांच बार गुरु मन्त्र उच्चारण और बाद में भी गुरु मन्त्र उच्चारण कर लें, यह सिर्फ एक बार किया जाता है, उसके बाद मन्त्र जप प्रारम्भ कर दें ।

जब मन्त्र जप सम्पन्न हो रहा हो, और बीच में ही भगवती भुवनेश्वरी विग्रह के साक्षात् दर्शन सुलभ हो जाय, तब दोनो हाथ जोड़ कर भक्ति भाव से भगवती भुवनेश्वरी के दर्शन कर लें और प्रणाम कर आशीर्वाद प्राप्त करें, कि वह सिद्ध हो और साधक के जीवन के सारे मनोरथ पूर्ण करे । ●

हर हर हर महादेव

शिव साधना-सम्पूर्ण विधानम्

विशिष्ट शिव त्र्यम्बक प्रयोग

देवाधिदेव भगवान शंकर आदिदेव हैं 'श्वेताश्वेतरोपनिषद" के अनुसार "सृष्टि के आदिकाल में जब अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात थी, न सत था न असत था, तब केवल एक निर्विकार शिव (रुद्र) ही थे, महाभारत के अनुशासन पर्व में तो उन्हें ब्रह्मा व विष्णु का भी रचयिता कहा गया है इसीलिए तो इन्हें देवो के देव महादेव कहा गया है।

एकाकी शिव प्रायः योगी रुप में ही प्रकट हुए हैं, शिव योगीराज हैं योगाधीश्वर हैं उनका रूप विलक्षण होते हुए भी प्रतीक पूर्ण है। उनकी स्वर्णिम लहराती जटा उनकी सर्वव्यापकता की सूचक, है जटा में स्थित गंगा कलुषता नाश तथा चन्द्रमा अमृत का द्योतक है गले में लिपटा सर्प, कालस्वरूप है, जिस पर शिव आराधना कर विजय पाई जा सकती है, इस सर्प अर्थात् काल को वश में करने से ही ये "मृत्युंजय" कहलाये। त्रिपुण्ड, योग की तीन नाड़ियों इड़ा, पिंगला, एवं सुषुम्ना -की द्योतक है तो ललाट स्थित तीसरा नेत्र आज्ञा-चक्र का द्योतक होने के साथ ही भविष्यदर्शन का प्रतीक है। उनके हाथों में स्थित त्रिशूल तीन प्रकार के कष्टों-दैहिक, दैविक, भौतिक-के विनाश का सूचक है, तो त्रिपल युक्त आयुध सात्विक, राजसिक, तामसिक-तीन गुणों पर विजय प्राप्ति को प्रदर्शित करता है, कर स्थित डमरू उस ब्रह्म निनाद का सूचक है जिससे समस्त वाङ्मय निकला है, कमण्डल, समस्त ब्रह्माण्ड के एकीकृत रूप का द्योतक है, तो व्याघ्रचर्म मन की चंचलता के दमन का सूचक है, शिव के वाहन नंदी धर्म के द्योतक हैं, जिस पर वे आरूढ़ रहने के कारण ही धर्मेश्वर कहलाते हैं, उनके शरीर पर लगी भस्म संसार

की नश्वरता की द्योतक है।

शिव और शक्ति मिल कर ही पूर्ण बनते हैं, शक्ति "इकार" की द्योतक है, इसलिए शिव में से "इकार" अर्थात् शक्ति हटा दी जाय तो पीछे "शव" ही रहता है, अतः शक्ति की सारूप्यता से ही "शव" पूर्ण रूप से शिव कहलाते हैं, और यही इनका अर्धनारीश्वर रूप है। शैव दर्शन के अनुसार यह रूप ब्रह्म और आत्मा का समन्वित रूप है, जो द्वैतवाद का सूचक है। इस अर्धनारीश्र रूप में शिव का आधा दायां भाग पुरुष का एवं आधा बांया भाग पार्वती का है। शिव वाले भाग में सिर पर जटाजूट, सर्पमाल, सर्पयज्ञोपवीत् सर्पकुण्डल, बाघाम्बर, त्रिशूल आदि है जबकि पार्वती वाले भाग में सिर पर मुकुट, कुण्डल, सुन्दर वस्त्र, रम्य अभूषण, केयूर-मेखला, कंकड़ आदि है, इस प्रकार का रूप ही रम्य तथा शैव शाक्त का समन्वित स्वरूप है।

शिव का एक रूप हरिहर भी है जिसमें "हरि" अर्थात् विष्णु और "हर" अर्थात् शिव का समन्वित स्वरूप है। यह पालन और संहार का सूचक है, मानव जाति के नित्य उज्ज्वल नवीन रूप का द्योतक है।

भगवान शंकर त्रिगुणात्मक हैं, ब्रह्मा स्वरूप सृजन-कर्त्ता, विष्णु पालन कर्त्ता एवं रुद्र स्वरूप सहार कर्त्ता। ये तीनों ही रूपों का समन्वित रूप महादेव है, इसलिए तो इन्हें "हरिहर पितामह" कहा गया है, अथर्व वेद में भगवान शिव को 'हरिहर हिरण्यगर्भ' भी कहा गया है, अतः भगवान शंकर-ब्रह्मा, विष्णु एवं शिव का समन्वित रूप शिव है, केवल इनकी पूजा ही समस्त देवताओं की पूजा अर्चना है, जो कुछ दृश्य है वह शिव है, जो कुछ घटित है वह शिव है……… यह सारा संसार शिवमय है, शिव स्वरूप है, शिव युक्त है।

भगवान शंकर स्वयं निर्विकार रह कर विकार युक्त विश्व की व्यवस्था करने में संलग्न हैं, कैलाश की उत्तंग शिखिर पर हिमाच्छादित चोटियों के मध्य "शंकर धाम कैलाश" में न तो कोई चिन्ता है और न कोई सन्ताप ही। स्वयं निर्मुक्त होते हुए भव बन्धन को तोड़ने में सक्षम, शिव के अतिरिक्त और कोई देवता ऐसा नहीं है जो जन्म मरण के कलुष को धो कर अभय दे सके, स्वयं स्थिर और निश्चल होते हुए भी चराचर जगत में कण-कण में व्याप्त है, इसलिए तो शंकर चराचरात्मर हैं, शंकर हैं, अभयंकर हैं।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, शुभ है, मंगलयुक्त है, जीवन में पूर्णता देने में शिव अग्रणी हैं, क्योंकि शिव भोग और मोक्ष दोनों के ही प्रदाता हैं, शिव औढ़रदानी हैं, जो क्षण में ही पसीज कर भक्तों को अभय कर देते हैं, भगवान शंकर आशुतोष हैं, जिन भक्तों की जैसी इच्छा होती है, उसी के अनुसार उनकी इच्छा तुरन्त पूर्ण करने में अग्रणी हैं, इसलिए तो शंकर को 'भोगश्च मोक्षश्च करस्थय एव' कह कर सम्बोधित किया है, इसलिए तो भीष्म पितामह को केवल यही कह कर चुप हो जाना पड़ा कि जो सबमें रहते हुए भी किसी को दिखाई नहीं देते, ऐसे महादेव के गुणों का वर्णन करने में मैं सर्वथा असमर्थ हूं।

शिवरात्रि से अक्षय तृतिया तक का समय 'शिव समय' कहलाता है, शास्त्रों के अनुसार इस पूरे समय में शिव से सम्बन्धित जितने भी अनुष्ठान सम्पन्न किये जाएं उतने कम हैं, और शिव समय में शिव साधना से लाभ भी प्रत्यक्षतः प्राप्त होता है। इस वर्ष यह समय १६ फरवरी १६६३ में २५ अप्रैल १६६३ के बीच है। आइये सबसे पहले शिवरात्रि के सम्बन्ध में चर्चा करते हैं। इस बार शिवरात्रि पर विशेष महोत्सव उज्जैन में सम्पन्न होगा और उज्जैन का द्वादश ज्योतिर्लिंग में प्रमुख स्थान है उज्जैन स्थित शिव स्वरूप को महाकाल कहा जाता है और उज्जैन का पौराणिक नाम महाकालेश्वर ही था।

श्री महाकालेश्वर

उज्जैन उन पवित्र सात नगरियों में से एक है जहां की यात्रा मोक्षदायिनी कही जाती है। यहां का प्रसिद्ध मन्दिर भगवान महाकाल का मन्दिर है। यह मन्दिर एक

भील के पास है, और इसके पांच तल्लों में से एक तल्ला भूगर्भ है। मुख्य मन्दिर के मार्ग में अंधेरा रहता है, अतः वहां निरन्तर दीप जलते रहते हैं।

'शिव पुराण' में वर्णित महाकाल की कथा इस प्रकार है-अवन्ति में एक धर्मात्मा ब्राह्मण रहता था उसके चार पुत्र थे। रत्नमाला पर्वत वासी दूषण नाम के एक राक्षस ने नगर को घेरकर जनता को दुःखी करना प्रारम्भ किया। जनता योग सिद्ध उस ब्राह्मण की शरण में गई उसके तप से प्रसन्न होकर भगवान महाकाल पृथ्वी फाड़कर प्रगट हुए और राक्षस का संहार किया। भक्तों की प्रार्थना पर भगवान महाकाल स्थायी रूप से वहीं निवास करने लगे।

कहा जाता है कि नित्य प्रातः ताजे मुर्दे की भस्म महाकाल पर चढ़ाई जाती है।

दिल्ली से कोटा, नागदा जंक्शन होते हुए उज्जैन पहुंचा जा सकता है। यह शहर इन्दौर और भोपाल के बीच है तथा इन्दौर से बस द्वारा आसानी से यात्रा की जा सकती है।

शिवरात्रि का महत्व दीपावली की रात्रि कालरात्रि और नवरात्रि जिसे कि महारात्रि कहा जाता है उससे भी बढ़ कर है, देवों के देव शिव जब जाग्रत होते हैं तो उनके वर के प्रभाव से दरिद्र की दरिद्रता दूर होती है, सन्तान प्राप्ति होती है, पीड़ित व्यक्ति को रक्षा प्राप्त होती है, बीमार निर्बल और यहां तक कि काल के चंगुल में फंसा हुआ व्यक्ति भी इस साधना से यमराज को अपने से दूर करने में समर्थ रहता है, क्योंकि यह निश्चित तथ्य है कि यहां भगवान शिव ने प्रसन्न होकर कृपा कर दी अथवा कोई वरदान प्रदान कर दिया तो उसे मिटाने की क्षमता किसी अन्य देवी-देवता में नहीं है, साधारण मनुष्य की बिसात ही क्या। शिव साधना से तो उसके जीवन पर एक रक्षा कवच ही आ जाता है।

अब शिव साधना का प्रभावशाली तन्त्र प्रयोग सम्पन्न करें—

शिव त्र्यम्बक अनुष्ठान

भगवान शिव का एक नाम त्र्यम्बक है, उनके इस स्वरूप की साधना करने से साधक अपने जीवन के पापों से तो मुक्त होता ही है, साथ ही साथ रक्षा, श्री, कीर्ति, कान्ति हेतु इसे श्रेष्ठतम प्रयोग माना जाता है, राज्योन्नति अर्थात् राज्य लक्ष्मी एवं यश प्राप्ति का भी यही श्रेष्ठतम उपाय है।

यह साधना साधक किसी भी सोमवार को प्रातः प्रारम्भ कर सकता है, लेकिन शिव साधना में कुछ विशेष नियम हैं, जिनकी पालना आवश्यक है। उन्हें साधक ध्यान से पढ़ें और भगवान शिव का कोई भी प्रयोग करते समय इन बातों को ध्यान रखे —

- शिव पूजा, स्नान करके ही सम्पन्न की जाती है, और धोती सही रूप से पहिनें, न कि तहमत की तरह लपेट कर पहिनें।
- शिव पूजन से पहले गणपति पूजन अनिवार्य है।
- शिव पूजन में साधक उत्तर की ओर मुंह करें और अपने सामने ही शिवलिंग इत्यादि यन्त्र, मूर्ति स्थापित करें, इसके अलावा अन्य सभी दिशाएं वर्जित हैं।
- साधक गले में रुद्राक्ष माला पहनें और अपने सिर पर त्रिपूण्ड अवश्य लगावें।
- बिल्व पत्र–शुद्ध, ताजे, एवं कटे-फटे न हों, पुष्प भी सुगन्धित हों, बिना सुगन्ध के पुष्प का प्रयोग न करें।
- गणेश जी को तुलसीदल और मां पार्वती को दुर्वा नहीं चढ़ावें।
- पत्र, पुष्प, फल आदि का मुंह नीचे करके नहीं चढ़ावे, बिल्वपत्र डठल तोड़ कर उलटे करके चढ़ावें, भगवान शंकर को कमल, गुलाब, कनेर,

सफेद आक (मदार) तथा धतूरा सबसे अधिक प्रिय हैं।

- शिव की परिक्रमा आधी ही की जाती है, भूल कर भी शिव की पूरी परिक्रमा न करें।
- शिवलिंग पर चढ़ाया हुआ प्रसाद ग्रहण नहीं करना चाहिए, अपितु उनके सामने चढ़ाया हुआ फल, प्रसाद जो भी हो वही ग्रहण करें, अतः साधक को शिवलिंग पर केवल दुग्ध धारा, बिल्व पत्र के अतिरिक्त कोई भी पदार्थ न चढ़ावें अपितु शिवलिंग के सामने रखें।

त्र्यम्बक साधना में साधक स्वयं ही बैठें और यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को पूजा में साथ बिठाएं।

इस साधना में तीन वस्तुएं—१-**त्र्यम्बक शिव सिद्धि महायन्त्र**, २-**शिवलिंग** (**पारदेश्वर अथवा नर्मदेश्वर**), ३-**रुद्र शक्ति बीज** आवश्यक है, इसके अतिरिक्त मन्त्र जप केवल **रुद्राक्ष माला** से ही सम्पन्न करें।

सर्वप्रथम श्वेत वस्त्र बिछा कर मध्य में एक तांबे का पात्र रखें और उसमें गणपति मूर्ति स्थापित कर उसका पूजन करें, तत्पश्चात् इसे अपने बांये हाथ की तरफ एक कोने में रख दें और आगे दीपक जला दें। इसके बाद एक कलश लेकर उस पर नारियल स्थापित करें तथा कलश पूजन संपन्न करें। इस कलश को अपने दाहिनी ओर स्थापित करें अब दो पात्र लें, सबसे आगे एक पात्र में शिवलिंग स्थापित करें, दूसरे पात्र में "**शिव त्र्यम्बक यन्त्र**" स्थापित करें, शिवलिंग की पूजा में दुग्ध मिश्रित जलधारा प्रवाहित करते हुए बिल्व पत्र चढ़ाए और १०८ बार "**ॐ नमः शिवाय**" का पाठ करें। इस जल को पूजन के पश्चात् परिवार के सभी सदस्य नेत्रों के मस्तक के तथा कंठ के स्पर्श करावें।

अब दूसरे पात्र में स्थापित शिवलिंग को चावल की ढ़ेरी पर स्थापित करें और ऊपर जो दिये गये नियम हैं, उन्हीं के अनुसार पुष्प, फल इत्यादि से पूजन करें, तत्पश्चात् साधक शक्ति पूजन प्रारम्भ करे, इस शक्ति पूजन में चार चक्र का पूजन है, ये चारों चक्र गोलाकार रूप में शिव त्र्यम्बक यन्त्र के चारों ओर चावल की ढेरी बनाकर उस पर एक-एक रुद्र बीज मन्त्र पढ़ते हुए रखें।

विनियोग

ॐ अस्य त्र्यम्बकमन्त्रस्य वशिष्ठ ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, त्र्यम्बकपार्वती देवता, त्र्यं बीजम्, वं शक्तिः, कं कीलकम्, सर्वेष्टसिद्धर्थे जपे विनियोगः।

शक्ति पूजा

प्रथम आवरण

१-ॐ वामायै नमः, २-ॐ ज्येष्ठायै नमः, ३-ॐ रौद्रायै नमः, ४-ॐ काल्यै नमः, ५-ॐ कलविकरिण्यै नमः, ६-ॐ बलविकरिण्यै नमः, ७-ॐ बलप्रमथिन्यै नमः, ८-ॐ सर्वभूतदमन्यै नमः, ९-ॐ मनोन्मन्यै नमः।

द्वितीय आवरण

१-ॐ रमायै नमः, २-ॐ राकायै नमः, ३-ॐ प्रभायै नमः, ४-ॐ ज्योत्स्नायै नमः, ५-ॐ पूर्णायै नमः, ६-ॐ ऊषायै नमः, ७-ॐ पूरण्यै नमः, ८-ॐ वसुधायै नमः।

तृतीय आवरण

१-ॐ विश्वायै नमः, २-विद्यायै नमः, ३-ॐ सितायै नमः, ४ ॐ प्रह्वायै नमः, ५-ॐ रारायै नमः, ६-सन्ध्यायै नमः, ७-ॐ शिवायै नमः, ८-ॐ निशायै नमः।

चतुर्थ आवरण

१-ॐ आर्यायै नमः, २-ॐ प्रज्ञायै नमः, ३-ॐ प्रभायै नमः, ४-ॐ मूर्घायै नमः, ५-ॐ शान्त्यै नमः, ६-ॐ कान्त्यै नमः, ७-ॐ धृत्यै नमः, ८-ॐ मृत्यै नमः ।

पंचम आवरण

१-ॐ धारायै नमः, २-ॐ मायायै नमः, ३-ॐ अवन्त्यै नमः, ४-ॐ पद्मायै नमः, ५-ॐ शान्तायै नमः, ६-ॐ मोघायै नमः, ७-ॐ जयायै नमः, ८-ॐ अमलायै नमः ।

प्रत्येक शक्ति पूजन में एक-एक पुष्प पंखुड़ी तथा एक-एक सुपारी, रुद्र बीज स्थापित कर रखनी है, प्रत्येक पर चन्दन का तिलक करना है ।

अब साधक शिव यन्त्र की पूजा सम्पन्न करे, इस पूजा में भी चन्दन, घी, दूध, दही, शक्कर, शहद, मिश्री पंचामृत से बिल्व पत्र पुष्प दूध के नैवेद्य से करना है । शुद्ध घी का दीपक अवश्य ही पूजन के प्रारम्भ में जला दें अब अपने गले में धारण रुद्राक्ष माला से निम्न मूल मन्त्र का पाठ प्रारम्भ करें—

शिव त्र्यम्बक मन्त्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।

इस मन्त्र का जप ५ माला तो करना ही है, साधना में सिद्धि के लिए पुरश्चरण में एक लाख मन्त्र का विधान है, अतः साधक हर सोमवार को यह विशेष पूजन विधान संपन्न कर सकता है, जब एक लाख मन्त्र जप हो जाये तो साधक यज्ञ संपन्न करे । यज्ञ में अलग-अलग इच्छाओं की पूर्ति हेतु अलग-अलग सामग्री का विधान है ।

मूल रूप से दस वस्तुएं-बेल, फल, तिल, खीर, घी, दूध, दही, दुर्वा, वटवृक्ष की लकड़ी, तथा खैर की लकड़ी घी में डुबो कर होम करना चाहिए । ब्रह्म तेज हेतु पलास की समिधाओं (लकड़ी) से होम, कांति एवं पुष्टि के लिए खैर की समिधाओं से होम, धन धान्य समृद्धि हेतु वट वृक्ष की समिधाओं से होम, तिल की आहुति से पाप मुक्ति तथा अकाल मृत्यु और शत्रु पर विजय हेतु पीली सरसों से आहुति, दुर्वा के होम से समस्त व्यधियों से मुक्ति प्राप्त होती है ।

यहां तक लिखा गया है कि जो साधक प्रति दिन प्रातः स्नान कर सूर्य के समक्ष इस त्र्यंबक मन्त्र का एक हजार बार जप कर लेता है और यह कार्य प्रतिदिन संपन्न करता है तो वह शारीरिक एवं मानसिक रोगों से विमुक्त होकर इस मन्त्र के प्रभाव से अपनी समस्त कामनाओं में सिद्धि प्राप्त करता है ।

शिव साधना में एक से एक अनोखे प्रयोग हैं, क्योंकि शिव ही तो मन्त्र दाता और तन्त्र रचयिता हैं, कन्या के विवाह हेतु, श्रेष्ठ पति हेतु, रोग शांति हेतु, पुत्र प्राप्ति हेतु, सन्तान रक्षा हेतु, यश प्राप्ति हेतु अनेकों विलक्षण प्रयोग हैं, जिनके बारे में पत्रिका के आगे के अंकों में अवश्य लिखा जायेगा । साधक शिव को इष्ट मान कर निरन्तर शिव पूजा से साधना से संसार में ऐसी कोई सिद्धि नहीं है जो प्राप्त न कर सकें । ●

सामग्री, जो आपकी सधनाओं में सहायक हैं

साधनाओं में सफलता प्राप्त करने के लिए विशिष्ट उपकरणों की आवश्यकता होती है, अतः इस अंक में जिन साधनाओं का विवरण दिया गया है, उनसे सबंधित मन्त्रसिद्ध प्राण प्रतिष्ठित सामग्री साधकों की सुविधा के लिए उचित मूल्य पर उपलब्ध कराने हेतु कार्यालय ने व्यवस्था की है।

आप केवल पत्र द्वारा सूचित कर दें, कि आपको क्या सामग्री चाहिए, हम डाक व्यय सहित वह सामग्री वी.पी. द्वारा भिजवा देंगे, जिससे सामग्री उचित समय पर सुरक्षित रूप से आपको प्राप्त हो सके।

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
रोग चिकित्सा : साधनाओं से	२१	—	
१-उदर रोग		रोग मुक्ति यन्त्र	— १५०)रु०
		हकीक माला	११०)रु०
२-चर्म रोग-रक्त रोग		नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५०)रु०
३-बाल रोग		शिशु रोग निवारण यन्त्र	२००)रु०
४-खांसी और दमा		छोटा दक्षिणावर्ती शंख	३००)रु०
प्राण तोषिणी अनुष्ठान	२५	प्राण तोषिणी माला	१२०)रु०
भुवनेश्वरी साधना रहस्य	२९	—	
१-तांत्रोक्त साधना	३०	तांत्रोक्त सिद्ध भुवनेश्वरी यन्त्र, लघु नारियल, दस हकीक नग, मोती शंख, सिद्धिफल, स्फटिक माला (भुवनेश्वरी तांत्रोक्त साधना पैकेट)—	— ३००)रु०
२-मांत्रोक्त साधना	३२	त्रैलोक्य मोहन भुवनेश्वरी यन्त्र, स्फटिक माला (भुवनेश्वरी मांत्रोक्त साधना पैकेट)—	३००)रु०
शिव त्र्यम्बक प्रयोग	३५	शिव त्र्यम्बक शिव सिद्धि महायन्त्र	२१०)रु०
		पारद शिवलिंग	३००)रु०
		(अथवा) नर्मदेश्वर शिवलिंग	१५०)रु०
		४१ रुद्र शक्ति बीज	५१)रु०
		रुद्राक्ष माला (छोटे दाने की)	३००)रु०

अब साधक कलम को सिन्दूर में डुबो कर भोज पत्र अथवा पीपल के बारह पत्तों पर "क्रीं" बीज मन्त्र लिखे, विनियोग के साथ ही साधक को वीर मुद्रा में बैठ कर हाथ में चावल लेकर उन्हें सिन्दूर से रंग कर अपना संकल्प बोलकर इन चावलों को अपने पीछे फेंक दें।

साधक कालरात्रि महाविद्या की महा शक्तियों का पूजन उनके नाम मन्त्रों से करे, प्रत्येक मन्त्र बोल कर उस दिशा में एक पीपल का पत्ता जो कि 'क्रीं' बीज मन्त्र लिखा है उस पर सरसों की ढेरी बना कर मन्त्र बोलते हुए उस पर कालरात्रि शक्तिबीज स्थापित करे —

पूर्व दिशा में—	ॐ मायायै नमः।	ॐ कालरात्र्यै नमः।	ॐ वटवासिन्यै नमः।
दक्षिण दिशा में—	ॐ गणेश्वर्यै नमः।	ॐ कान्हायै नमः।	ॐ व्यापिकायै नमः।
पश्चिम दिशा में—	ॐ अलर्कवासिन्यै नमः।	ॐ मायाराज्ञै नमः।	ॐ मदनप्रियायै नमः।
उत्तर दिशा में—	ॐ रत्यै नमः।	ॐ लक्ष्म्यै नमः।	ॐ कान्हेश्वर्यै नमः।

अब महायन्त्र का पूजन धूप, दीप, नैवेद्य सिन्दूर एवं हिंगुल आदि से सम्पन्न करे, विशेष अनुष्ठान हेतु देवी को मद्य का भोग भी अर्पित किया जाता है।

अब साधक कालरात्रि देवी का ध्यान करे और उसकी भक्ति से प्रसन्न होकर वर प्राप्ति की प्रार्थना करे।

अब साधक एक दीपक और जलाये और उसे अपने सामने स्थापित करें, धूप में लोबान इत्यादि थोड़ा और डाले, फिर इसके बाद कालरात्रि महामन्त्र का उच्चारण स्पष्ट शब्दों में वीर मुद्रा में बैठ कर सम्पन्न करे—

कालरात्रि महामन्त्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं श्रीं कान्हेश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वमुखस्तम्भनि सर्वराजवशंकरि सर्वदुष्ट निर्दलनि सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षिणि वन्दी शृंखलास्त्रोटय त्रोटय सर्वशत्रू भजय भंजय द्वेष्टृननिर्दलय निर्दलय सर्वस्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिण उच्चाटय उच्चाटय सर्व वशं कुरु कुरु स्वाहा देहि देहि सर्व कालरात्रि कामिनि गणेश्वरि नमः॥

प्रति शनिवार को इस प्रकार पूजन करने से प्रबल से प्रबल शत्रु परास्त हो जाता है और कालरात्रि प्रसन्न होकर साधक को अभीष्ट वर प्रदान करती है। कैसा भी तन्त्र प्रयोग हो, जीवन में महासंकट हो, इस अनुष्ठान से वह संकट शान्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार साधक को कम से कम एक हजार मन्त्र जप करना चाहिए, पूर्ण सिद्धि के लिए दस हजार मन्त्र जप सम्पन्न करना आवश्यक है। ●

कालरात्रि महायन्त्र—३००)रु० तथा बारह कालरात्रि शक्तिबीज—६०)रु०।

भूल सुधार :—इस अंक के पृष्ठ संख्या-३ पर प्रकाशित महाशिवरात्रि साधना शिविर प्रेस की गलती से १७, १८, १९ जनवरी छप गया है जिसका शुद्धीकरण 'जनवरी' के स्थान पर 'फरवरी' कर लें।

रजि० नं० : ३५३०५/८१ अजय कुमार उत्तम पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७